जन-जन की दृष्टि में : अणुव्रत आन्दोलन

जन-जन की दृष्टि में अणुव्रत आन्दोलन

मुनि मोहजीत कुमार

आशीर्वचन-१

अणुव्रत के विचार किसी व्यक्ति विशेष के विचार नही हैं, क्षेत्र विशेष के विचार नही है और काल विशेष के विचार नही है। इसीलिए वे विचार त्रैकालिक हैं, सार्वभौम और सर्वग्राही है। कोई भी विचारशील व्यक्ति जब कभी अणुव्रत दर्शन को समझेगा, अपने आप उससे सहमत हो जाएगा। उस संदर्भ मे सम्मति के अतिरिक्त विमति को अवकाश मिलना ही कठिन है। इसका साक्ष्य है 'जन-जन की दृष्टि मे : अणुव्रत आन्दोलन।'

सन्त, साहित्यकार, चिन्तक, पत्रकार, सम्पादक, राजनयिक, समाजनेता—किसी भी वर्ग का, किसी भी उम्र का, कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, उसने अपने अणुव्रत के संबंध मे कुछ भी कहा हो, वह पठनीय और मननीय है। इस दृष्टि से मुनि मोहजीत ने यत्र-तत्र बिखरे हुए विचारों को एक शृंखला मे जोड़ने का प्रयास किया है। उसका यह प्रयास अणुव्रत को समझने में सहयोगी बनेगा, ऐसा प्रतीत होता है। अणुव्रत को समझने के बाद उसके आदर्शों पर चलने के लिए सकल्पित होना पाठकों का काम है। पाठक इसके लिए अपनी मानसिकता तैयार करेंगे, इसी विश्वास के साथ।

जैन विश्व भारती
लाडनूं (राज०)
७ सितम्बर, १९८६

—आचार्य तुलसी

आशीर्वचन-२

भारतीय चिन्तन मे नैतिक विकास का बहुत मूल्य रहा है और नैतिक विकास के उन्नयन मे अणुव्रत आदोलन ने बहुत कार्य किया है। अणुव्रत आदोलन के प्रति भारतीय मस्तिष्क मे विचार का ऊर्जस्वल होना आश्चर्य की बात नही है। विगत चार दशको मे अनेक भारतीय और विदेशी विचारको ने अणुव्रत आदोलन और अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के विषय मे जो विचार सजोए तथा प्रकट किए हैं, उनका संकलन मुनि मोहजीत ने बडे श्रम के साथ किया है। वह पाठक को नयी जानकारी देगा और अणुव्रत के विषय मे चिंतन का नया आयाम और नई प्रेरणा भी देगा। प्रत्येक व्यक्ति सोचने के लिए स्वतंत्र है फिर भी कौन व्यक्ति किस संदर्भ मे, किस परिस्थिति मे क्या सोचता है यह जानना भी कम उपयोगी नही है। यह उपयोगिता का परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत संकलन को और अधिक उपयोगी बना देता है।

—युवाचार्य महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती
लाडनू (राज०)
१ सितम्बर, १६८६

एक नजर

'आचार्यश्री तुलसी' के आचार्य शासना के गौरवशाली ५०वें वर्ष के प्रवेश पर उनके कार्यों का सक्षिप्त दर्शन अनेक धाराओ तथा नानाविधो में प्रस्तुत हो रहा है। इसी कडी मे प्रस्तुत कृति 'जन-जन की दृष्टि मे : अणुव्रत अन्दोलन' आचार्यश्री तुलसी के कर्तृत्व व अणुव्रत आंदोलन की वैचारिक क्रान्ति का निदर्शन है।

आज का युग विचार-प्रधान युग है। वर्तमान साहित्य नाना धाराओं मे विकसित हुआ है, हो रहा है। साहित्य की अनेक धाराओं में चितन और विचार-प्रधान साहित्य ही उपयोगी माना गया है। आज का विचार-प्रधान मस्तिष्क इतिहास पढने की अपेक्षा इतिहास गढने मे अधिक विश्वास रखता है। विचारवादी धारा मे व्यक्ति प्रतीक होता है, विचार पूज्य। मानव-निर्माण के धरातल पर खडा अणुव्रत आदोलन एक विचार ही नही बल्कि समग्र जीवन का दर्शन है। इस विचारवादी युग मे नाना विचारको, राजनयिको, लेखको और वक्ताओ ने अणुव्रत आदोलन के विचार-शिखर पर बैठकर जन-जीवन की अनगिन समस्याओ पर विचार किया है।

इसी सदर्भ मे अमृत महोत्सव के अवसर पर युवाचार्यश्री के नेतृत्व मे साहित्य सर्जन व सम्पादन की शृंखला मे प्रस्तुत कृति भी एक कडी है। पृथक-पृथक स्थानो पर बिखरी हुई विचार-प्रधान सामग्री को सम्पादित करने का सौभाग्य मिला। मुख्यतः आचार्यश्री तुलसी अभिनन्दन ग्रंथ, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी द्वारा सम्पादित यात्रा ग्रन्थो तथा विज्ञप्तियो का आश्रय लिया गया। इसी के साथ-साथ अन्य ग्रंथो व स्थानो से भी

जहां-तहां सामग्री मिली उसका समुचित प्रयोग किया गया है।

'आचार्यश्री तुलसी' की असीम अनुकम्पा मुझ पर सदैव बनी रही है और रहेगी। मैं इस असीम अनुकम्पा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर उसे ससीम नहीं बनाना चाहता। 'युवाचार्यवर' का सफल निर्देशन युग-युग तक मार्ग प्रस्तुत करता रहेगा। जिन के पास मुनि जीवन के अत्यधिक क्षण बिताए, मेरी हर प्रवृत्ति का समुचित मार्ग-दर्शन करने हेतु तत्पर 'मुनिवर सुखलाल'जी का किन भावों मे आभार व्यक्त करू। अस्तु—

प्रस्तुत कृति पाठको को आचार्यश्री तुलसी व अणुव्रत आन्दोलन की विचारधारा जन-जन के मुख से जन-जन तक पहुचने मे सफल होगी। इसी आशा के साथ।

'शरद पूर्णिमा' —मुनि मोहजीत कुमार

१९८५ अमृतवर्ष

तेरापथ भवन

'भीलवाड़ा'

जन-जन की दृष्टि में : अणुव्रत आन्दोलन

राजनयिक

अणुव्रत आन्दोलन का उद्देश्य नैतिक जागरण और जन-साधारण को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना है। यह प्रयास अपने आपमें ही इतना महत्त्वपूर्ण है कि इसका सभी को स्वागत करना चाहिए। आज के युग में जब कि मानव अपनी भौतिक उन्नति से चकाचौंध होता दिखाई दे रहा है और जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक तत्त्वो की अवहेलना कर रहा है, वहा ऐसे आन्दोलनो के द्वारा ही मानव अपने सन्तुलन को बनाए रख सकता है और भौतिकवाद के विनाशकारी परिणामो से बचने की आशा कर सकता है।

—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

हम ऐसे युग मे रह रहे है, जब हमारा जीवात्मा सोया हुआ है, आत्मबल का अकाल है और सुस्ती का राज्य है। हमारे युवक तेजी से भौतिकवाद की ओर झुकते चले जा रहे है। इस समय किसी भी ऐसे आन्दोलन का स्वागत हो सकता है जो आत्म-बल की ओर ले जाने वाला हो। इस समय हमारे देश मे 'अणुव्रत आन्दोलन' ही एक ऐसा आन्दोलन है, जो इस कार्य को कर रहा है। यह काम ऐसा है कि इसको सब तरफ से बढावा मिलना चाहिए।

—डॉ० एस० राधाकृष्णन्

अणुव्रत आन्दोलन राष्ट्र के उत्थान के लिए एक सामूहिक आन्दोलन है, ऐसे आन्दोलन धर्म की पृष्ठभूमि को विकासशील बना सकते है। सब धर्म इस आन्दोलन को बल दे सकते है। इसके प्रवर्तक ने विशाल दृष्टि से इसको रखा है, जिससे समस्त धर्मावलम्बी सहयोग कर सके। यह आन्दोलन मूलभूत सिद्धान्तो को लिये हुए है। इसके प्रणेता की भावना इसको किसी पर थोपने की नही है। परन्तु जो कार्य करे उस पर दृढ़ रहे। साधारण लोग भावना मे बह जाते है परन्तु अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक (आचार्यश्री तुलसी) अपने कार्य के लक्ष्य को पूरा करने मे उस व्यक्ति की सच्चाई चाहते है। मेरी राय मे यह आन्दोलन जनता के नैतिक एवं सास्कृतिक उद्धार की दिशा मे पहला कदम है।

—राजगोपालाचार्य

आचार्य तुलसीजी मानवता के पुजारी है। उनका आन्दोलन हृदय-परिवर्तन के माध्यम से काम करने वाला अभियान है। विचारों और अन्तःकरण के परिवर्तन से जो नयी ऊर्जा और शक्ति जीवन मे सम्प्रेषित होगी, वही वास्तव मे अणुव्रत आन्दोलन की उपलब्धि होगी। इसी उद्देश्य को लेकर अणुव्रत को और अधिक व्यापक बनने का प्रयास करना चाहिए।

—डॉ० जाकिर हुसैन

आज दुनिया को नैतिक उत्थान की जितनी आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नही थी। कोई राष्ट्र तब तक प्रगति नही कर सकता अथवा अपने को बलवान नही कर सकता, जब तक उसके लोग उच्च आदर्शों का अनुकरण नही करते और सद्‌गुणी नही होते। जीवन के प्रति भौतिक दृष्टिकोण ने लोगो को स्वार्थी बना दिया है और भ्रष्टाचार एवं भ्रष्ट व्यवहारो, जैसे कि रिश्वतखोरी और मिलावट ने भारतीय जीवन को तबाह कर दिया है, आज हम मानव भविष्य के चौराहे पर खडे है, ऐसी स्थिति मे जबकि हमारे पास युगों पुरानी परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत मे मिली हुई निधि विद्यमान है तब समस्त अंधकार को दूर करने के लिए केवल एक मशाल की आवश्यकता है। अणुव्रत आन्दोलन वह मशाल है।

—वी० वी० गिरि

सब धर्मों का सार एक है कि इंसान को समझो और इसान की खिदमत मे अपने-आपको लगाओ, इसके लिए अहिंसा का मार्ग स्वीकार करना होगा। सबको अपने जैसा समझना होगा और सच्चाई का आचरण करना होगा।

हमे भौतिक उन्नति के पीछे न दौडकर नैतिक मूल्यो पर अमल करना होगा। महावीर ने अपनी आवश्यकता छोडी और मन को मजबूत किया। उसी प्रकार सब लोग अपनी आवश्यकता को सीमित करे और अनुशासन मे रहें तो कठिनाइयो का मुकाबला किया जा सकता है। महावीर ने महाव्रत और अणुव्रत की बात कही, उस पर चलकर अपने जीवन को अच्छा बनाए।

—फकरुद्दीन अली अहमद

हमारा देश जातिवाद के जाल में फंसा है। जाति का महत्त्व अपनी जगह पर है। मनुष्य का महत्त्व उससे बडा है। आज देश के नागरिकों को जरूरत है मानव को मानव समझने की। अणुव्रत का आन्दोलन जो कि आचार्य तुलसीजी द्वारा चलाया गया। वह यह कहता है कि मानव को मानव समझो। इसके छोटे-छोटे नियम देश के चरित्र की नींव को मजबूत बनायेंगे। मुझे आशा है कि देश के नागरिक लोग इसे सुनेंगे और अपनायेंगे।

—नीलम संजीव रेड्डी

आपके कार्यक्रम मे सबसे अधिक बल मानवता को दिया गया है। जातिवाद, मजहब, इलाकापरस्ती तथा सकीर्ण विचारो से आचार्यश्री बहुत दूर हैं। आचार्यश्री ने इस दिशा मे बहुत अच्छा काम किया है। ऐसे महापुरुष को सरकार की जरूरत नही है, बल्कि सरकार को उनकी जरूरत है। आप पदयात्री है, सारे देश मे घूम-घूमकर व्यक्ति-सुधार, समाज-सुधार एव राष्ट्र-सुधार के लिए काम कर रहे है। इसान जब तक इंसान नही बनेगा, उसकी भक्ति, शक्ति और सम्पत्ति का कोई मूल्य नही होगा। इसान बनाने का काम अणुव्रत कर रहा है, हम सब इनके सहयोगी बने।

—ज्ञानी जैलसिंह

आचार्यश्री तुलसीजी अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से मानव कल्याण के लिए मानव समुदाय को जागृति का सन्देश दे रहे है। वह जागृति है नैतिकता की, मनुष्य के चरित्र-निर्माण की। देश के जन-जीवन के विकास के लिए सच्ची खुशी और स्थायी सुख के लिए मानव-चरित्र पर बहुत कुछ निर्भर करता है। इसी चरित्र के आधार पर हमे संस्कृति के गौरव की गरिमा प्राप्त हुई है। मनुष्य जीवन के लिए मनुष्य का चरित्र उसका एक मूल्यवान अलंकार है। इस अलकार को शिरोधार्य कर महान् बने।

—बी० डी० जत्ती

देश की आजादी मे महात्मा गाधी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, और मानव निर्माण में आचार्य तुलसी जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। आजादी के बाद आज देश को कर्त्तव्य-निष्ठ, सद्-चरित्र, ईमानदार मनुष्यो की आवश्यकता है। आचार्य जी भी अणुव्रत के द्वारा यही कार्य कर रहे है। हमे इन्हे पूरा सहयोग करना चाहिए।

—गोपालस्वरूप पाठक

अणुव्रत आन्दोलन चरित्र-निर्माण का आन्दोलन है। यह सर्वथा राजनीति से दूर है तथा रखना है। उसका किसी दल या व्यक्ति-विशेष से संबंध नहीं होना चाहिए। स्थिति तो यह होनी चाहिए कि हर राजनैतिक दल अपनी पार्टी के विधान में अणुव्रत को स्थान दे। राजनैतिक शुद्धि के लिए सभी राजनैतिक पार्टियों के कार्यकर्त्ता अणुव्रती बनें। जब तक राष्ट्र के नेता अणुव्रती नहीं बनेंगे तब तक वे सही अर्थ में देश के नेता नहीं बन सकेंगे।

—हिदायतुल्ला

हमे अपने देश का मकान बनाना है तो उसकी बुनियाद गहरी होनी चाहिए। बुनियाद यदि रेत की होगी तो पानी आते ही रेत बह जाएगी। मकान भी ढह जायेगा। गहरी बुनियाद चरित्र की होती है देश मे बड़े-बड़े काम करने है। उसके लिए मजबूत दिल, दिमाग और अपने को काबू मे रखने की शक्ति चाहिए। ये बाते हमे सीखनी है। इन सबकी बुनियाद 'चरित्र' है। कितना अच्छा काम अणुव्रत-आन्दोलन मे हो रहा है। मैंने विचारा—इस काम मे जितनी तरक्की हो उतना ही अच्छा है। मैं चाहता हूं—अणुव्रत-आन्दोलन का जो काम हो रहा है, वह पूरी तरह से सफल हो।

—पं० जवाहर लाल नेहरू

अणुव्रत-आन्दोलन ने प्रत्येक वर्ग को अपनी ओर खींचने का प्रयास किया है और जैन समुदाय पर स्वभावत: इसका विशेष प्रभाव पड़ा है। नैतिकता उपदेशों से कम उदाहरण से ही पनपती है। आचार्यश्री तुलसी स्वयं उस मार्ग पर आचरण कर दूसरों को उस ओर प्रेरित करना चाहते हैं। हम सब उनके इस आन्दोलन के स्वरूप को समझें और अपने जीवन को एक नये रूप में ढालने का प्रयास करें।

—लाल बहादुर शास्त्री

हम सब भारत के नागरिक हैं। चाहे बडे हो, चाहे छोटे हों, हम सब भारतीय है। अपने देश की मशीन के पुर्जे है। हर पुर्जे को अपना-अपना काम करना है। ईमानदारी और निष्ठा से करना है। अगर हम अपना काम ईमानदारी से करेंगे, मयम और अनुशासन से करेंगे तो हमारा देश ऊंचा बनेगा। अणुव्रत-आन्दोलन आज का नहीं है, यह वर्षों से चलाया जा रहा है। यह हमे यही कहना है कि हमारा चरित्र ऊंचा हो। देश के लोग चरित्रवान् बने। हमे अपने देश को महान् बनाना है। महान् बनाने के लिए चरित्रवान् नागरिक चाहिए। चरित्रवान् नागरिक वह होता है जिसमे एकता की भावना हो, जिसमे आत्म-संयम हो। आचार्य जी हमे यही शिक्षा देते है। मै शुभकामना करती हूं कि आचार्य जी हम लोगो का सतत मार्ग-दर्शन करते रहे।

—श्रीमती इन्दिरा गांधी

अणुव्रत के द्वारा आज समाज में नैतिकता, आस्थाशीलता और चरित्र-गठन का जो कार्य हो रहा है उसमें कुछ भी मदद कर सकूं तो वह करना मेरा धर्म है। मैं जहां तक समझता हूं कि अणुव्रत धर्म का सही तत्त्व फैलाने का एक उपक्रम है।

—मोरारजी भाई देसाई

मानव-जन्म विकास के लिए है, विनाश के लिए नही। व्यक्ति और समाज निष्ठा, सादगी और सत्य के अन्वेषण से बढते हैं। आचार और विचार में संयम होना चाहिए और हम सब मनुष्य की एकता के लिए काम करे।

आचार्य तुलसी इन नैतिक मूल्यो के प्रसार के काम मे लगे हैं। उनके अमृत महोत्सव पर मैं उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

—राजीव गांधी

अणुव्रत आन्दोलन ने देश मे नैतिक वातावरण बनाया है। नैतिकता जीवन मे उपयोगी तत्त्व है। समाज और देश का उत्थान नैतिकता के बिना नहीं हो सकता। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा देश की जनता को नैतिकता का सदेश दिया है।

मैं समझता हूं कि देश मे नैतिक वातावरण का निर्माण अगर किसी ने किया है तो उसका श्रेय अणुव्रत आन्दोलन को जाता है।

—चौधरी चरण सिंह

मैं मानता हूं कि व्रतों के बिना दुनिया चल नही सकती। व्रतो को त्यागने से सर्वनाश हो जाता है। मै व्यक्ति-सुधार मे विश्वास नही रखता। सामूहिक सुधार को सत्य मानकर चलता हू। व्यक्ति-सुधार की प्रक्रिया मे उतना वेग और उत्साह नही रहता, जितना सामूहिक सुधार मे रहता है। इसके तात्कालिक परिणाम भी लोगो को आकृष्ट कर लेते हैं। अणुव्रत आन्दोलन इस दिशा मे मार्ग-सूचक बने, ऐसी मेरी भावना है।

—आचार्य जे० बी० कृपलानी

अणुव्रत-आन्दोलन असाम्प्रदायिक और सार्वभौम है। यह चाहे जिस नाम से चले, हमे काम से मतलब है और इसका नामकरण चाहे जो भी कर दिया जाये, लाभ वही होगा। इसलिए अपेक्षा यह है कि आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित नैतिक अभ्युत्थान के इस पथ को समझ, परख और सीखकर जीवन में अनुकरण करे। साथ ही उसके आधार पर अपने व्यवसाय, उद्योग-धन्धों में ऐसे ठोस कदम उठाएं जिनसे जन-जीवन को भी प्रेरणा मिल सके। कर्म केवल नाम लेने, जय-जयकार करने और मस्तक झुकाने से नहीं होता, अपितु आचरणो मे परिलक्षित होता है।

आचार्यश्री तुलसी के नेतृत्व मे जो मगलकारी कार्य हो रहा है, उसके साथ मैं तन्मय हू और मेरी जो कुछ भी शक्ति है, उसे इस पुण्य कार्य में लगाने को तत्पर हू।

—लोकनायक जय प्रकाश नारायण

'अणुव्रत' की कल्पना बहुत सुन्दर है और उसने बहुतों को व्रती बनाकर उनके जीवन की गति मे अच्छी भावना का प्रवेश कराया है।

देश मे नैतिकता की गहरी कमी दिखाई पडती है। उसमे परिवर्तन करने के लिए अणुव्रत आन्दोलन सहायक हो सकता है। आचार्य तुलसी अपनी कल्पना की पूर्ति मे अधिकाधिक सफलता पाए। यह मेरी अभिलाषा स्वाभाविक है। आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत आन्दोलन की सफलता के लिए हम सबकी श्रद्धा और सहयोग के अधिकारी है।

—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन

हमारे देश को आजाद हुए तीन दशक से ज्यादा हो गये। फिर भी स्वतन्त्रता का सूर्य धूमिल-सा दिखाई दे रहा है। आजादी से पूर्व स्वतंत्र भारत की जो तसवीर लोगों के दिमाग मे थी। वह आज वैसी नही है। आचार्यश्री तुलसी जैसे संत-महात्माओ ने राष्ट्र के कर्णधारों का ध्यान इस ओर खींचा है। आचार्यश्री ने युग को नयी दृष्टि दी है। आपने अणुव्रत के रूप में युग का दिशा-दर्शन किया है।

—पुरुषोत्तम मावलंकर

अणुव्रत आन्दोलन का लक्ष्य चरित्र-निर्माण है जिसकी आज आवश्यकता है। आचार्यजी ने इसे चरित्र-निर्माण की अपेक्षा से चलाया है। चरित्र व्यक्ति की वह निधि है जिसे कोई छीन नही सकता।

इसके साफल्य के लिए हम सबको हाथ बंटाना चाहिए।

—निरंजन नाथ आचार्य

आपके बहुमूल्य विचारों से मैं प्रभावित हूं। आप भारत की महान् विभूति हैं। हमारे देश में नैतिकता का जो अभाव है वह अणुव्रत को स्वीकार करने से दूर हो सकता है। आपके सान्निध्य से लाभ उठाकर जीवन को नीति और न्याय की दिशा मे मोड़ना इस युग की बहुत बड़ी अपेक्षा है।

—के० एस० हेगड़े
अध्यक्ष, लोक सभा

अणुव्रत देश की छवि को सुधारना चाहता है । देश की छवि हम सब पर निर्भर है। हम यदि नैतिक और चरित्रवान बने तो ही देश की सुन्दर तसवीर देशवासियो के सम्मुख रख सकेगे । नैतिक और चारित्रिक उत्थान की बात लेकर आचार्यजी सब वर्गो से मिलते है । हम सदस्यो को आपकी बात मुननी व अपनानी चाहिए ।

—गुरुदयाल सिह ढिल्लो
अध्यक्ष, लोक सभा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उत्पादन और सम्पदा-उपार्जन की दिशा में देश ने प्रगति की है। किन्तु आज देश को कई विषमताओं का सामना करना पड़ रहा है। इसका कारण है—अनैतिक आचरण और दुर्व्यसन। इन्ही से उत्पन्न होने वाली आर्थिक व सामाजिक विषमताओ ने देश को प्रगति के मार्ग पर बढ़ने से रोका है। अणुव्रत आदोलन इस विषमता को मिटाने का देश मे एक मात्र साधन है।

—बलराम जाखड़
अध्यक्ष, लोक सभा

आचार्य तुलसी अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से लोगो मे धर्म-बुद्धि जगाने का जो प्रयत्न कर रहे है, वह स्तुत्य है। और इस काम मे जो सफलता मिली है, उसके लिए ये सब लोग बधाई के पात्र है जिन्होने उनके साथ सहयोग किया व कर रहे हैं।

—**डॉ० सम्पूर्णानन्द**
राज्यपाल

मानवीय प्रकृति की सीमाओं को मस्तिष्क मे रखना सर्वश्रेष्ठ है। अणुव्रत-आन्दोलन के नियम इस बात को ध्यान में रखते हुए बनाये गये है कि यदि कठोर नियम लिये जाएं तो हर प्रकार की दुविधा व कठिनाई आयेगी और जिनका परिचालन मानव की पहुच के बाहर है। हमे जीवन मे सम्पूर्ण निषेध या अति कठिन वैराग्य के बदले संयम, नियमन और अनुशासन की अपेक्षा है। हम जानते हैं, ऐसी प्रतिज्ञाओ के जनसाधारण द्वारा पाले न जा सकने के कारण इस प्रकार के कितने प्रयत्न वृथा गए। अतः मध्यम मार्ग का अनुसरण करना तथा भलाई और बुराई के बीच एक संतुलन बनाए रखना सबसे अधिक उपयुक्त है। मैं उस मार्ग को बहुत पसंद करता हू, जिसके द्वारा अणुव्रत आंदोलन जनता के नैतिक जागरण का कार्य कर रहा है।

—श्रीप्रकाश
राजपाल, बम्बई

अणुव्रत मानव मात्र के लिए सम्रथन सूत्र है। नैतिक उत्क्रान्ति मे आचार्य तुलसी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सभी महान् धर्मों का मुख्य ध्येय यही रहा है कि खासकर मानव-जीवन मे एकता स्थापित हो। मनुष्यो के बीच इस विभाजन को तोडने का, मानव-मानव को जोडने का कार्य अणुव्रत कर रहा है। इसकी रूप-रेखा सम्प्रदायातीत है।

—सादिक अली
महाराष्ट्र

आचार्यश्री हमारे देश के महापुरुष है। आर्थिक, नैतिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल के इस दौर मे आचार्यश्री 'अणुव्रत आदोलन' द्वारा मानव-समाज का सही पथ-दर्शन कर रहे है। आपकी साधना विश्व हित के लिए है इसलिए मै आपको विश्वपथी के रूप मे देखता हूं। आप महान् कर्मयोगी हैं। कर्मयोगी वह होता है जो देश मे घूम-घूमकर अपनी जीवन-साधना की अनुभूतियो द्वारा जनता का मार्ग प्रशस्त करे।

—खण्डु भाई देसाई
राजपाल, आध्र प्रदेश

'अणुव्रत' से मैं परिचित हू । मेरे दिल पर इसका प्रभाव है। 'अणुव्रत' की सबसे बडी विशेषता है कि कोई भी व्यक्ति कही भी रहता हुआ सरलता से इसका पालन कर सकता है । आचार्यश्री जंगम तीर्थ है । ये जहा भी जाते है, वहा का वातावरण इनसे प्रभावित हो जाता है।

आज हम 'अणुव्रत' के महत्त्व को आक सके या नही किन्तु सदियो बाद इतिहास बताएगा कि अणुव्रत के माध्यम से देश मे बहुत बडी क्रान्ति हुई थी ।

—नित्यानन्द कानूनगो
राजपाल, गुजरात

आचार्यश्री तुलसी के जीवन व कार्यों से सदा हमें प्रेरणा मिलती रहेगी और हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि जो सिद्धान्त उन्होंने हमारे सामने रखें, उनको ग्रहण करें ! देश की वास्तविक उन्नति तभी हो सकती है जब सामाजिक और आर्थिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उत्थान भी हो। मेरी यह कामना है कि अणुव्रत आन्दोलन सफल हो और जनता की रुचि इसमें अधिकाधिक बढ़े।

—गुरुमुख निहालसिंह

हम स्वतन्त्र हो गए हैं और इसके बाद हमारा यह कर्तव्य रह जाता है कि हम शस्त्रास्त्रो के निर्माण की अपेक्षा अपने आचरण को ठीक करें। हमे ऐसा कोई काम नही करना चाहिए जो हमारे लिए व समाज के लिए हानिप्रद हो। अणुव्रत-आन्दोलन एक जन-जागृति मूलक कार्यक्रम है और वह हमे एक ऐसा रास्ता दिखाता है, जिस पर चलकर हम अपना और समाज का उत्थान कर सकते हैं। अणुव्रत-आन्दोलन हृदय-परिवर्तन का प्रतीक है।

—हरिविनायक पाटस्कर
राज्यपाल (मध्यप्रदेश)

देश मे शाति और अहिसा की स्थापना के लिए आचार्यश्री जो कार्य कर रहे है, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति-व्यक्ति को नैतिक और ईमानदार बनाने का कार्य आचार्यश्री जैसे महान् पुरुष ही कर सकते है। अहिसा और शाति मे विश्वास करने वाली सारे देश की जनता की ओर से आचार्यश्री से यह प्रार्थना करता हू कि आप अपने कार्य को और अधिक तीव्रता से चलाए, ताकि देश मे जो लोग हिंसा का वातावरण बना रहे है, उन्हे रोका जा सके। अपनी साधना के साथ समाज और राष्ट्र की जो सेवा आचार्यश्री कर रहे है, उसे कभी भुलाया नही जा सकता है। आपकी सेवाओ के लिए देश आपका सदैव आभारी रहेगा।

—**ओ० पी० मेहरा**
राज्यपाल (राजस्थान)

गुरु नानक देव की भांति आचार्यश्री तुलसी भी सबकी भलाई के लिए काम कर रहे हैं। अणुव्रत के द्वारा नैतिकता और सादाचार की आवाज घर-घर पहुंचा रहे है। मेरा विश्वास है कि राज्य का नही, बल्कि देश की जनता का नैतिक निर्माण के महत्त्वपूर्ण काम देश के गौरव को बढ़ायेगा।

—जोगेन्द्रसिंह
राज्यपाल (पंजाब)

भगवान् महावीर का सन्देश था। सत्य, अहिंसा, शान्ति, वैयक्तिक स्वतंत्रता और आचार। आज सारी दुनिया पर हिंसा का वातावरण फैलता जा रहा है। इसका कारण है धर्म मे जब स्वार्थ प्रवेश कर जाता है तो धर्म अधर्म बन जाता है। धर्म और स्वार्थ एक साथ नही चल सकते। इस वातावरण को बदलना जरूरी है। भगवान् महावीर के सिद्धान्त और दर्शन हमारे लिए आदर्श हैं। अगर हमने उनके सिद्धान्तो को समझा और उन्हे जीवन मे उतारने का प्रयत्न किया तो हम शान्ति और अहिंसा की दुनिया में नयी मिशाल स्थापित कर सकते हैं। आचार्यजी भी हम लोगों को महावीर के सिद्धान्तो पर चलने की प्रेरणा देते हैं। आपकी आवाज जन-जन तक पहुचे।

—श्रीमती शारदा मुखर्जी
राज्यपाल (गुजरात)

आपने राष्ट्र के नैतिक एवं चारित्रिक पुनरुत्थान का जो महान् कार्य हाथ में लिया है वह हमारे पूज्य भारतीय सन्तो की उज्ज्वल परम्परा के अनुरूप ही है। इस देश मे कितने महापुरुषो ने कठिनाइयो और बाधाओं के बावजूद भ्रमण कर मानव जाति का पथ-दर्शन किया। आचार्यश्री तुलसी उसी परम्परा की नयी कडी है। जो देश मे नैतिक जागरण के लिए अपना सारा जीवन दे रहे है। उन्हे इस महान् कार्य मे सफलता मिलती रहे।

—डॉ० कैलाश नाथ काटजू

अणुव्रत का आन्दोलन चरित्र-निर्माण का आन्दोलन है और आज संसार को इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। अभी तक इन व्रतों का स्थान व्यक्तिगत मूल्यों के रूप मे ही था, पर आचार्य तुलसी और उनके कर्मठ अनुयायियो के अथक परिश्रम का फल है कि उन्हे अब सामाजिक मूल्य मिल रहा है। ज्यो-ज्यों इन व्रतों का सामाजिक मूल्य बनता जायेगा, त्यों-त्यो मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता जायेगा। मै इस आन्दोलन का स्वागत करता हू।

—गोविन्द वल्लभ पन्त

आज संसार को संहार से कोई बचा नही सकता, अगर कोई बचा सकता है तो ऐसे आध्यात्मिक संघ व आचार्य तुलसी जैसे महान् व्यक्ति ही बचा सकते हैं। मैं मानता हूं कि आचार्यश्री का आध्यात्मिक कार्यक्रम केवल भारत के लिए ही नही, समग्र मानव-जाति के कल्याण के लिए है।

—सी० सुब्रह्मण्यम्

विज्ञान की तीव्र प्रगति के परिणामस्वरूप भौतिक साधनो का बाहुल्य अवश्य उपलब्ध हो गया है। परन्तु इसके साथ-साथ नैतिक बल का ह्रास हुआ है। आज का मानव विध्वंसता के कगार पर खडा है। मानव की संहारमय प्रवृत्ति को नैतिकता ही नियंत्रित कर सकती है।

आज का यह भौतिकवादी समाज नैतिक विचारो से प्रभावित हो तो यह संसार स्वर्ग बन सकता है। अणुव्रत नैतिकता का पाठ पढाता है। यह एक जन-हितकारी कार्यक्रम है। भारतीय संस्कृति के उत्थान मे इस आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण योगदान है और रहेगा।

—उ० न० ढेबर

राष्ट्र की असली सम्पत्ति बड़ी-बड़ी योजनाए, कारखाने या विशाल इमारतें नही है। राष्ट्र की सच्ची सम्पत्ति और सुख का कारण तो वास्तव मे समझदार और नैतिक नागरिक है, जिन्हे अपने कर्त्तव्यो और अधिकारों का पूरा-पूरा भान होता है। भारतीय लोक राज्य का चिह्न भी धर्मचक्र है जिसका अर्थ है सच्ची प्रगति धर्म के अर्थात् कर्तव्य और सन्मार्ग के अनुसरण मे ही है। यदि इस चिह्न को हम भुला देगे तो हमारा कभी कल्याण नही हो सकता।

अणुव्रत आन्दोलन को मै नैतिक सयोजन का ही एक विशिष्ट उपक्रम मानता हू। यह आन्दोलन व्यक्ति की सुप्त नैतिक भावना को उद्बुद्ध करता है तथा विवेकपूर्वक जीवन का महत्त्व प्रत्येक व्यक्ति को समझाता है।

—श्री मन्नारायण

आज देश मे मूल्यो का संकट है। केवल भौतिक मूल्यों का ही नहीं, नैतिक मूल्यों का भी। यह विचित्र बात है कि अन्न, वस्त्र, सीमेन्ट आदि के मूल्य बढ़ रहे हैं और सत्य, सदाचार, सरलता आदि के मूल्य घट रहे हैं। आचार्यश्री ने नैतिकता के पुनर्जागरण के लिए बहुत कुछ किया है किन्तु देश की दशा को देखते हुए वह अपर्याप्त जान पडता है। हमारा कर्त्तव्य है कि प्रयत्नों को तीव्र करें और भारत को भोगवाद तथा अधिनायकवाद से बचाएं।

—**अटल बिहारी बाजपेयी**

आज सारे ससार मे चेतना का बहुत बडा समुद्र-मंथन हो रहा है। केवल भारत मे ही नही, समग्र मानव-जाति पर इस मथन का प्रभाव पडता है। इस प्रभाव मे कोई आदर्श प्रस्तुत करना है तो हमे आध्यात्मिक मूल्यो को अपनाना पडेगा, अणुव्रत इस दिशा मे हमारे लिए बहुत सहायक है। हम अपने जीवन मे अणुव्रत का उपयोग कैसे करे, इसका दिशा-दर्शन दे रहे है हमे आचार्यश्री तुलसी जी। आपके दिशा-दर्शन से लाभ उठाएं, ऐसा विश्वास है।

— डॉ० कर्ण सिह

प्रत्येक मनुष्य शान्ति चाहता है, पर वह शान्ति व सुख के मार्ग पर चलता नहीं, यही तो कारण है कि आज भीषणतम आणविक अस्त्रो के परीक्षण चल रहे है। मनुष्य सत्ता-लोलुप होकर सस्कृति और सभ्यता के साथ खिलवाड कर रहा है। यह आध्यात्मिकताशून्य भौतिक प्रगति का परिणाम है। आचार्यश्री-जैसे लोग ही आध्यात्मिक उत्थान के कार्य मे लगे है। यह चिर शान्ति का मार्ग है। मानवता के विकास का मार्ग है, हैवान रहते हुए भी चन्द्रलोक मे यदि मानव पहुंच गया है। तो वहां भी उसे आत्मिक शाति के अभाव मे धधकते अंगारे ही मिलेंगे। अणुव्रत आन्दोलन विश्व-बन्धुता और विश्व-मैत्री का राजमार्ग है।

—यशवन्त राव चव्हाण.

व्यक्ति से समाज बनता है। यदि अच्छे समाज व देश का निर्माण करना है तो व्यक्ति को अच्छा बनना पड़ेगा। अणुव्रत आन्दोलन सबसे पहले व्यक्ति को स्वयं सुधरने के लिए कहता है। अगर समाज एव राष्ट्र को, जीवन को ऊचा उठाना है तो पहले स्वय को उठाओ।

आचार्यजी मानव को मानव बनाने का प्रयत्न आन्दोलन के माध्यम से कर रहे है। यह राष्ट्र के गौरव की बात है। हमे अपने सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करना चाहिए।

—पीलू मोदी

महावीर ने त्याग, तपस्या, समता और ज्ञान की एक परपरा छोड़ी है। उस परपरा को आगे बढाने का दायित्व आचार्यप्रवर के सबल कधो पर है। आचार्यश्री ने भगवान् महावीर के विचारो एवं सिद्धान्तो को बहुत व्यापक बनाया है। विरोधी से विरोधी व्यक्ति भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि आचार्यश्री तुलसी ने महावीर एव उनके दर्शन को विस्तार दिया है।

इसी दर्शन के आधार पर उन्होने देश को चरित्रवान व अनुशासनप्रिय बनने की शिक्षा प्रदान की है।

—चन्दन मल बैद

दुनिया मे हर सम्प्रदाय का जन्म धर्म-प्रचार के लिए ही होता है। आज हम देखते है कि देश मे जो मानवता थी वह टुकडो-टुकड़ो मे टूट रही है। इसका कारण, लगता है, सही दिशा-दर्शन का अभाव और नैतिक कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता का अभाव। अणुव्रत हमे सही दिशा-दर्शन देता है। नैतिकता का सदेश देता है। आचार्यजी ने इस आन्दोलन को लेकर व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुचने का प्रयास किया। वे इसमे सफल भी हुए हैं। हम तथा हमारे देश की जनता नैतिक कर्त्तव्यो के प्रति जागे, यही विश्वास है।

—कमला पति त्रिपाठी

अणुव्रत आन्दोलन ने एक नयी क्रान्ति का सूत्रपात किया। आचार्यश्री ने देश का भविष्य ध्यान मे रखकर नया दिशा-दर्शन दिया। आज हम जो समन्वय का वातावरण देख रहे हैं, इस वातावरण को तैयार करने में अणुव्रत आन्दोलन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

—राज नारायण

अणुव्रत व्यक्ति-सुधार से समाज और राष्ट्र-सुधार का अभियान लेकर चल रहा है। भारतीय दर्शन मे व्यक्ति और समाज दोनो समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। समाज-सुधार की ठोस पृष्ठभूमि व्यक्ति-सुधार ही है। गाधीजी ने साध्य और साधन दोनो पर समान रूप से बल दिया है। आचार्यश्री भी सभी सासदो को साध्य और साधन दोनो की शुद्धि पर ध्यान देने के लिए मार्ग-दर्शन करे।

—वियोगी हरि

आज देश को कानून से नही बल्कि हृदय-परिवर्तन करके ही सुधारा जा सकता है। अणुव्रत आन्दोलन हृदय-परिवर्तन का आन्दोलन है। आचार्य-तुलसी इस आन्दोलन को लेकर व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुचे हैं। इसमे व्यक्ति-निर्माण की बहुत बडी शक्ति अन्तर्निहित है। यदि इस शक्ति का समुचित उपयोग कर सके तो एक आदर्श राष्ट्र की परिकल्पना साकार हो सकेगी।

—राम जेठ मालानी

अणुव्रत आन्दोलन ने देश मे नैतिक जागरण तथा चरित्र-निर्माण की दिशा मे जो रचनात्मक कार्य किया है वह महत्त्वपूर्ण है। ऐसे समय, जबकि नैतिक मान्यताओ के प्रति हमारी आस्थाएं दुर्बल होती जा रही है, हमे सच्चे मार्ग प्रदर्शन की आवश्यकता है। आशा है यह आन्दोलन इस दिशा मे समाज का उचित पथ-प्रदर्शन कर सकेगा।

—कृष्ण चन्द्र पत

अणुव्रत आन्दोलन अहिंसात्मक प्रतिकार का अमोघ साधन है। आज देश का वातावरण भयभीत है। इससे उबरने के लिए अणुव्रत का सहारा ही सहायक बन सकेगा। अणु की शक्ति महान् है। अणुव्रत की शक्ति भी व्यक्ति को महान् बनाती है।

—हेमवती नन्दन बहुगुणा

देश के भीतर जो रोग लगा हुआ है उसका इलाज है अणुव्रत। आज सबसे अधिक अभाव है—चरित्र का, ईमानदारी का। अणुव्रत को स्वीकार करके हम इस बीमारी से मुक्त हो सकते है। मै एक अणुव्रती के तौर पर अपना पूर्ण सहयोग और समर्थन दूगा।

—शाह नवाज खां

मैं अणुव्रत आन्दोलन को सर्वाधिक महत्त्व देता हूं। चूकि उसका उद्देश्य है जाति, समाज, वर्ग और सम्प्रदाय-भेद से रहित मानव मात्र का नैतिक विकास करना। आज ससार मे जैन, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम, वैष्णव आदि अनेको धर्म-सम्प्रदाय है। अणुव्रत इन सबका समन्वित रूप नवनीत है। समस्त धर्मों के मूलभूत तत्त्व एक है। यह तो हमने भुला दिया था। अणुव्रत ने सर्वधर्म समन्वय का लक्ष्य विश्व के सम्मुख उपस्थित किया है।

—पी० एन० दातार

आचार्यश्री तुलसी आधुनिक युग के उन लोगों मे से हैं जिन्होने समाज के उत्थान के लिए महान् प्रयत्न किया है। उनके द्वारा सचालित अणुव्रत आन्दोलन दरअसल गिरते हुए मानव को उठाने के लिए महान् प्रयत्न है। कहने को तो वह छोटे-छोटे व्रत हैं किन्तु उनके अपनाने के बाद कोई ऐसी बात नहीं रह जाती जो मनुष्य के विकास मे बाधा पहुचाए।

—प्रकाश वीर शास्त्री

अणुव्रत अभियान संस्कार-निर्माण का अभियान है। इसके व्रतों मे सहज संस्कार प्रस्फुटित होते हैं। आज समाज व देश मे नैतिक संस्कारो का ह्रास होता जा रहा है। अपेक्षा है अणुव्रतों का सन्देश व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुंचे। विचारो को फैलाने के लिए आज के इस संचारवादी युग मे अनेक साधन उपलब्ध हैं। मैं चाहता हू उन साधनो का सही और व्यवस्थित उपयोग हो।

—**लाल कृष्ण अडवानी**

अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा नैतिक चरित्र के पुनरुत्थान का जो कार्य किया जा रहा है, वह स्पृहणीय है। मैं अणुव्रत आन्दोलन के उद्देश्य तथा आयोजन की सफलता की कामना करता हूं।

—अशोक मेहता

कानून कितने ही बनाये जाएं, उनसे कोई मौलिक सुधार होने का नही, क्योंकि कानून केवल हाथ-पांव को पकडते है, मन को नही। अणुव्रत आन्दोलन ने मन को पकड़ा है। सब लोगों का मन यदि सुधर जाए तो देश की तस्वीर ही बदल जायेगी। यह आज के युग मे व्याकुल मन की खुराक है। इस आन्दोलन मे मेरी पूरी सहानुभूति है और इस काम मे मैं भी सबके साथ हू।

—मौलाना आजाद

व्रतो और आदर्शों को जीवन-व्यवहार मे लाना ही यथार्थ कार्य है। यदि भारतीय जनता इन व्रतो को अपने जीवन मे उतारे, तो यह महान् राष्ट्रीय उपलब्धि होगी। यही नही व्यापारी, विद्यार्थी तथा अन्य लोग इन व्रतो से प्रेरणा लेकर यदि दूर देशो मे जाए तो मुझे विश्वास है कि उनके सम्पर्क मे आने वाले पाश्चात्य लोग भी अणुव्रत आन्दोलन से प्रभावित होगे।

—कृष्ण मेनन

चरित्र-निर्माण और नैतिक उत्थान भारत के सन्त-महात्माओं के जीवन का लक्ष्य रहा है। सामाजिक बन्धनो से मुक्त होकर भी वे सदा समाज-कल्याण का चिन्तन और समाज का मार्ग-दर्शन करते रहे। आचार्य तुलसी भी ऐसे ही महापुरुषों मे एक हैं, जो अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा समाज मे नैतिकता और चरित्र-निर्माण की पृष्ठभूमि का निर्माण कर रहे हैं।

—जगजीवन राम

'अणुव्रत' आन्दोलन से देश और समाज को सही दिशा मिली है। आचार्यश्री के अथक प्रयासों से राष्ट्रव्यापी भ्रष्टाचार का उन्मूलन और वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान हो सकेगा। हमारे देश मे सदाचार और मानवीय मूल्यों को प्रस्थापित करने का कार्य 'अणुव्रत' ही कर सकता है।

—गुलजारी लाल नन्दा

महावीर, बुद्ध, शंकर ने संसार को सत्य का मार्ग दिखाया। आचार्यश्री भी यही काम कर रहे हैं। अणुव्रत के द्वारा वे मनुष्य को पवित्रता का संदेश दे रहे हैं।

—निर्जलिंग गप्पा

आचार्यश्री तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन देश को भौतिक नही, बल्कि आध्यात्मिक संबल प्रदान करता है। आज ऐसे सबल की देश को ही नही, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति को जरूरत है। देश के नायको से यह अपेक्षा है कि इस आन्दोलन को अपना सहयोग और समर्थन दे।

—गोकुल भाई भट्ट

हमारे इतिहास मे समय-समय पर कुछ ऐसी स्थितियां आयी, जिनसे जीवन के नैतिक मूल्य कमजोर होते गये और लोग सही मार्ग से विचलित होने लगे। ऐसे अवसरों पर हमारे देश के महापुरुषो ने जनता का पथ-दर्शन किया और जीवन के सही मूल्यो से उन्हे अवगत कराया। आज आचार्यश्री तुलसी देश के लोगो को ऊंचा उठाने के लिए ऐसा ही कार्य कर रहे हैं। अणुव्रत आन्दोलन एक ऐसा ही आन्दोलन है, जो सोये हुए लोगो को नव-जागरण देना है।

हमारा कर्त्तव्य है कि इससे प्रेरणा लेते हुए अपने सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यो को पुनरुज्जीवित करें।

—श्रीमती लक्ष्मी मेनन

आचार्यश्री की आवाज युग की आवाज है। आप किसी वर्ग विशेष के लिए नही, अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए कार्य कर रहे है। आज का धर्म संयमविहीन होकर चल रहा है। आचार्यश्री इसीलिए तो धर्म क्रान्ति की बात करते हैं। जिस व्यक्ति के हृदय मे क्षमा, दया, करुणा के भाव नहीं होगे। वह धार्मिक नही बन सकता। मानवता एक-दूसरे को तोडती नहीं, जोडती है। यही मानवता का पाठ आचार्यश्री हमे सिखाते रहे।

—बी० के० भल्ला
नेपाल राजदूत

अणुव्रत आन्दोलन बहुत बड़ी चीज है यद्यपि इसमें बहुत छोटी-छोटी बातें बतायी गयी हैं। जीवन की सामान्य पद्धति की बाते हैं वे। जब तक जीवन पद्धति का निर्माण नही होता, सुधार नही हो सकता। आपका एक घोष है—'निज पर शासन, फिर अनुशासन' यह इस युग की सबसे बड़ी अपेक्षा है। जिस प्रकार बूद-बूद से समुद्र बनता है वैसे ही छोटी-छोटी बातो से ही जीवन महान् बनता है। अणुव्रत आन्दोलन विश्व-मानव का पथ-प्रदर्शक है।

—नगेन्द्र प्रसाद रिजाल
भूतपूर्व प्रधानमत्री, नेपाल

आचार्यश्री की वाणी दीपशिखा के समान है। आपकी वाणी के प्रकाश से हमारे अन्त.करण का अंधेरा ही नही मिटता, हमे अपने सासारिक समस्याओं का भी समाधान प्राप्त होता है। आपका बहुमूल्य चिंतन किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के लिए नही है, समस्त मानवजाति के लिए है। आपके द्वारा संचालित अणुव्रत एक ऐसा सोपान है, जिसके माध्यम से व्यक्ति नैतिकता के ऊंचे से ऊंचे शिखर तक पहुच सकता है। इसके छोटे-छोटे व्रतो को अपने जीवन, व्यवहार मे चरितार्थ कर मनुष्य महान् बन सकता है।

—विश्वनाथ प्रताप सिंह

आचार्यश्री तुलसी वर्तमान अशांति के युग में शोक-सन्तप्त अशात मानव को जीवन की शान्तिमय रूप-रेखा के मार्ग-दर्शक, तपोधन एवं महर्षि के रूप मे आज भारत मे विद्यमान हैं। आचार्य तुलसीजी ने अपूर्व साधना से न केवल अपना ही जीवन धन्य किया है बल्कि अपने प्रभावशाली साधु-सघ को भी एक विशेष गतिविधि देकर जनकल्याण के लिए अर्पित किया है जो बडा ही श्रेयस्कर कार्य है। वह केवल जैन-समाज के निमित्त ही नही, वरन् समस्त मानव-जाति के लिए एक ध्येय के रूप मे रहेगा।

—लाल चन्द सेठी

देश में नैतिक चेतना का जागरण हो। जन-जीवन मे नैतिक व चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हो। इस स्वर को जन-जन तक पहुचाने के लिए आचार्यश्री ने अणुव्रत का सन्देश दिया है। आपकी मानव-कल्याणी आवाज मानव के हृदय तक पहुंचे।

—श्यामा चरण शुक्ल

अणुव्रत आन्दोलन ने राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस भूमि पर अनेक आन्दोलन चल रहे हैं लेकिन मानव-उत्थान का लक्ष्य बनाकर चलने वाला यह प्रथम आन्दोलन है। नैतिकता के पुनरुज्जीवन मे उसने अपना सक्रिय योग दिया है।

—प्रकाश चन्द सेठी

आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन मे जो प्रगति अहिंसा मार्ग ने की है, वह सचमुच प्रशसनीय है। नैतिकता हमारे जीवन की आधारशिला है। यह वह मूलमंत्र है जिसे पूज्य बापू ने जीवन पर्यन्त एक सिद्धात माना। स्वराज्य के बाद योजना काल मे तो अहिंसा और नैतिकता की और भी आवश्यकता है।

—श्याम धर मिश्र

अनैतिकता तभी से शुरू हो गयी जब आदमी ने सभ्यता की परिधि में कदम रखा। हमारे देश के महापुरुषों ने समय-समय पर नैतिकता का उपदेश देकर इंसान को बेहतर इंसान बनाने का प्रयत्न किया है। अणुव्रत आन्दोलन के सिद्धांत देश के लिए बहुत उपयोगी सिद्धात है। हम इनसे प्रेरणा लेकर अपना जीवन सुधारने मे सफल हो गये तो देश और मानवता के लिए भी कुछ कर सकेंगे।

—आरिफ मुहम्मद खान

आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा जनता को जागृत कर रहे हैं। श्री वशेश्वर कल्याण राज्य के लिए प्रयास करते रहे। गाधीजी रामराज्य के लिए प्रयत्नशील थे। और मार्टिन लूथर किंग देवराज को आकार देना चाहते थे। अणुव्रत आन्दोलन इन सब कल्पनाओ के सामूहिक रूप से साकार करने का एक सुन्दर उपक्रम है।

—संगप्पा मुग्वल

राष्ट्र मे जातिवाद, अस्पृश्यता, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओ के सम्मुख-मानवतावादी मूल्यों का हनन हुआ। इन मूल्यों को कायम रखने के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात कर समस्या के समाधान मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

—डॉ० मोहनसिह मेहता

महात्मा गांधी के बाद हमारे देश मे आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति हैं, जो नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा मे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आप जो कुछ करते है, सम्पूर्ण मानवजाति के हित मे करते हैं, आज जो मानवीय मूल्यो मे गिरावट आ रही है उसे रोकने मे आप जैसे समर्थ सन्त ही सक्षम हो सकते हैं।

—शिवचरण माथुर

अणुव्रत अपने उदयकाल से अब तक नैतिक मूल्यो के प्रति जन-जन का ध्यान आकृष्ट करता है। अणुव्रत की अनुगूज को लोगों ने सुना है, समझा है तथा आचरण मे लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। जो अणुव्रत के आदर्शों को आधार मानकर चले हैं वे आत्मतोष और गौरव का अनुभव करते है।

—वीरेन्द्र कुमार सकलेचा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उत्पादन और तकनीकी के क्षेत्र मे देश ने बहुत प्रगति की है किन्तु राष्ट्र की समस्याए भी बढती जा रही हैं। इसका मूल कारण, लगता है देश के लोगो को जीने की पद्धति का ज्ञान नही है। अणुव्रत का उद्देश्य है—मनुष्य को जीने की कला सिखाना। उसका ध्येय है कि सबसे पहले मनुष्य चरित्रवान बने, मनुष्य अपनी इच्छाओ पर नियत्रण करे ताकि देश मे आदर्श की लहर फिर से दौड जाए।

—शान्ता कुमार

आज धर्म मजहब मे बधकर रह गया है। जब तक धर्म सही तरीके से जनता के सामने नही आएगा तब तक धर्म के प्रति लगाव नही जागेगा। आचार्य तुलसीजी का अणुव्रत धर्म, मजहब से दूर है। वह इसान को इसानियत का पाठ पढाता है। जिसकी आज देश को जरूरत है। ऐसे महापुरुष ही इसानियत का पाठ पढ़ा सकते है।

—बरकतुल्ला खां

आचार्यश्री बरसों से अहिंसा और सद्भाव का विकास करने के लिए प्रयत्नशील हैं। आज हमारा देश भारी उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है। गरीबी और बेरोजगारी की समस्या किसी से छिपी नही है, अपरिग्रह और अहिंसा आज के हालात को सुधार सकते है, पर यह तभी संभव है जब इन्हे जीवनगत किया जाए। आचार्यश्री के विचार युग के बहुत अनुकूल हैं। हमें इन विचारो का आदर करना चाहिए और देश की डावाडोल स्थित को संभालने मे अपना योगदान चाहिए।

—मोहनलाल सुखाड़िया

राष्ट्र मे फैली हुई बुराइयों का समुचित इलाज है—आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रेरित अणुव्रत आन्दोलन। मैं मानता हूं कि मानव को संयम की ओर प्रेरित करने वाला अगर कोई मिशन है तो वह है अणुव्रत आन्दोलन। इसके छोटे-छोटे नियमों को अपनाकर व्यक्ति सुखी जीवन जी सकता है।

—भैरोंसिंह शेखावत

महावीर के सिद्धान्तो को कहना जितना आसान है उतना उन पर चलना कठिन है। आचार्यश्री तुलसी स्वय महावीर के सिद्धान्तो पर चलते हैं। वे जन-जन को भी सिद्धान्तो पर चलने की प्रेरणा देते हैं। आपका यह अणुव्रत आन्दोलन मानव-निर्माण का आन्दोलन है।

—हरिदेव जोशी

आचार्यश्री 'अणुव्रत' के माध्यम से यह प्रयास कर रहे हैं कि मनुष्य के बीच की दीवार दूर हो जाए। वैचारिक संकीर्णता से यह दीवार इतनी लम्बी हो गयी है कि एक-दूसरे को पहचानने का प्रयास ही नही होता। व्यक्तिगत स्वार्थ से आदमी मानवीय हितो को कुचल रहा है। इन सब स्थितियों का मुकाबला करने मे 'अणुव्रत' का मार्ग देश मे महत्त्वपूर्ण है।

—अन्नादुरै

हमारे देश मे मानवता के स्तर को ऊंचा करना आवश्यक है। यह काम कानून से नही अंतःकरण की प्रेरणा से हो सकता है। अंतःकरण मे ऐसी भावना पैदा करने वाले आचार्य तुलसीजी हैं। मानवता के इस कार्य मे सहयोग देने के लिए हमे तत्पर रहना चाहिए।

—वसंत राव नाईक

आचार्यजी अणुव्रत आन्दोलन की आवाज को हर गांव और शहर में पहुंचा रहे हैं। आपकी मान्यता है कि आध्यात्मिक जीवन का क्रम स्वीकार किए बिना कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र अपना विकास नहीं कर सकता ; आज जन-साधारण की जिन्दगी भी अच्छी नही है। कारण उसकी नैतिकता उन्नत नही है। इस बल को बढ़ाने के लिए आचार्यजी के पैगाम पर अमल करना ही होगा।

—प्रकाशसिंह बादल

आचार्यश्री भेदभाव से ऊपर उठकर सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय का काम कर रहे है। अणुव्रत का कार्य करते समय आचार्यश्री को भयंकर विरोध का मुकाबला भी करना पडा है। महापुरुष मार्गगत कठिनाइयो को देखकर कभी रुकते नही। आचार्यश्री द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर हम अपने समाज एव राष्ट्र का विकास कर सकते हैं।

—जगन्नाथ पहाड़िया

अणुव्रत आदोलन जीवन-शुद्धि का आन्दोलन है। जब कार्य और कारण दोनो शुद्ध होते है तब परिणाम भी शुद्ध होता है। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक का व उनके साथी साधुओ का जीवन शुद्ध है। अणुव्रतों का कार्यक्रम भी पवित्र है इसलिए उनके कहने का असर पड़ता है। अणुव्रत आन्दोलन के व्रत सार्वजनिक है, प्रत्येक वर्ग के लिए इसमे व्रत रखे गए हैं, यह इसकी अपनी विशेषता है। व्रतो की भाषा सरल व स्वाभाविक है। अहिंसा आदि व्रतो का विवेचन सामायिक व युगानुकूल है। अहिंसा की व्याख्या व व्रतो मे शब्दो का संकलन मुझे बहुत ही अच्छा लगा। कहा गया, जीव मारना या पीड़ा पहुचाना तो हिंसा है आदि-आदि। इसी प्रकार सभी व्रत जीवन को छूते है। अणुव्रतियो का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मुझ पर आदोलन का काफी असर है। आचार्यश्री का यह सत् प्रयास सफल हो, यह मेरी कामना है।

—श्रीमती कृपलानी सुचेता

अमेरिका ने अणुबम का प्रयोग कर मानवता के इतिहास को कलंकित कर दिया। आज भी अनेक राष्ट्र अणुबम निर्माण की प्रतिस्पर्धा पर कार्य कर रहे हैं। सुरक्षा के नाम पर आणविक शक्ति-सवर्धन का यह क्रम मानवीय मूल्यो का घोर अपमान है। आचार्यश्री अणुबम से संत्रस्त मानवता को 'अणुव्रत' से त्राण दे रहे हैं। उनकी सवेदना से जनता राहत का अनुभव कर रही है।

—एस० आर० पाटिल

आचार्यजी ने मानव के चरित्र-उत्थान को लक्ष्य बनाकर अणुव्रत का सन्देश दिया। मैं मानता हूं, आपने मानव-कल्याण के लिए बहुत कुछ किया है। आप जैसे सन्त पुरुष ही मानव-कल्याण की बात सोच सकते हैं।

आपका यह आन्दोलन जाति और प्रान्त से अलग है। इसका संदेश हम सबके लिए है।

—सुरजीत सिंह बरनाला

जनतन्त्र और हिंसा का कभी मेल नहीं हो सकता, राजनैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यदि हिंसा का प्रयोग हो तो जनतन्त्र सुरक्षित नहीं रहेगा। यही कारण है कि आज चारो ओर भय व्याप्त है। भय से कभी स्थायी अनुशासन नहीं आ सकता। अगर अनुशासन लाना है तो एक मात्र अणुव्रत के सन्देश को अपनाना होगा। तभी हम अनुशासित हो सकेंगे।

—रामकिशोर व्यास
अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा

नैतिक मूल्य-विघटन का यह एक नाजुक दौर है। इस समय वैचारिक और व्यावहारिक क्रांति के द्वारा मूल्य प्रतिष्ठापन की दिशा मे अणुव्रत एक सफल उपक्रम है। आजादी के बाद देश को सुधारने के लिए अनेक योजनाएं बनी है किन्तु इंसान के सुधरे बिना देश का सुधार नही होगा।

—टी० एस० भारदे
अध्यक्षा, विधान सभा

अणुव्रत वैयक्तिक उत्कर्ष के साथ सामाजिक उन्नति की भूमिका तैयार करता है। भारत को आज इसकी बहुत बड़ी अपेक्षा है।

—बी० एस० पागे
अध्यक्ष, महाराष्ट्र विधान सभा

आज आचार्यश्री तुलसी की अपेक्षा केवल भारत को ही नहीं अपितु सारे देश और विश्व को है। मानवीय एकता की जो परिकल्पना आपने की है, उससे आप केवल तेरापंथ या जैनों के ही नही, सारे मानव-समाज के पथ-दर्शक बन गये।

—डॉ० एम० ए० मेहता
विधान सभा अध्यक्ष (गुजरात)

अणुव्रत-आन्दोलन का विशेष झुकाव एव ध्येय चरित्र-निर्माण की ओर प्रतीत होता है। राष्ट्रीय जीवन मे चरित्र-निर्माण का कितना महत्त्व है, यह किसी से छिपा नही है। अतीत भारत ने चरित्र-निर्माण मे संसार का गुरुत्व प्राप्त किया था। इसी गौरव को स्थिर रखते हुए हमे विश्व के प्रगतिशील राष्ट्रो के साथ आगे बढना है। इसी मे हमारा और हमारे देश का कल्याण निहित है।

—आ० गो० खरे
विधान सभा अध्यक्ष (उत्तर प्रदेश)

सरकार पंच वर्षीय योजना बना रही है। किन्तु जब तक हमारा चरित्र-स्तर ऊंचा नहीं होगा, देश का निर्माण नहीं हो सकता। आचार्यश्री द्वारा प्रस्तुत 'अणुव्रत' योजना से हमारे देश का हित हो सकता है।

—माणिक्य वेलूर नायकर
विधान परिषद अध्यक्ष (मद्रास)

धर्म का काम है सोये हुए व्यक्ति को जगाना। जागने का अर्थ है जीवन को सही दिशा की ओर ले जाना। इसके लिए हमे अपने पर काबू करना पड़ेगा। अपने पर काबू करने का पाठ हमे अणुव्रत के द्वारा आचार्यजी ने सिखाया है। हम इनके आभारी है कि इन्होंने हमे चरित्रवान जीवन जीने की शिक्षा दी है।

—एन० जी० गोरे

…अणुव्रत जहा चरित्र-निर्माण के द्वारा वास्तविक अर्थ मे राष्ट्र-निर्माण का कार्य है, वहा वह मानव-समाज के सार्वभौम उत्थान और संस्कार का महायज्ञ है। भारत का तो यही नारा रहा कि सबको, समस्त विश्व को, शुद्ध सस्कार देकर संस्कृत अथवा आर्यकोटि में ले आया जाए। अणुव्रत देश, जाति, वर्ण और पंथ-निरपेक्ष शुद्ध सत्य धर्म है। मैं इसकी सफलता चाहता हूं।

—मौलिचन्द शर्मा

राष्ट्र का निर्माण करने के लिए नैतिक और आध्यात्मिक पृष्ठभूमि की सदैव आवश्यकता होती है। और अणुव्रत आन्दोलन एक प्रकार से देश के नैतिक उत्थान का आन्दोलन है। जो आन्दोलन वर्तमान युग की चुनौती का सामना नही कर सकता वह चल नही सकता, यह आन्दोलन वर्तमान युग की चुनौती का उत्तर देता है।

वह केवल भौतिक विचारो का परित्याग करने और नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए काम करने का आह्वान करता है।

—जय सुखलाल हाथी

आचार्यश्री तुलसी एवं महात्मा गांधी के विचारों में अद्भुत सामंजस्य है। मानव-मानव एक है। उन्होंने कहा—इंसान-इंसान के बीच दीवार खड़ी करना अपराध है। धर्म का मूल सिद्धान्त है—स्याद्वाद। हम सुखपूर्वक जीएं तथा दूसरो को सुखपूर्वक जीने दे। अणुव्रत-अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी जो कुछ कह रहे हैं उस पर हमे गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। आचार्यश्री के बताए हुए मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

—डॉ० शंकर दयाल शर्मा

आज ऐसे विकृत कारनामे सामने आ रहे है, जो प्रजातन्त्र को नुकसान पहुचाना चाहते हैं। हमे हर कीमत पर प्रजातन्त्र को जिन्दा रखना होगा। सत्य बोलने की शपथ लेकर आज व्यक्ति असत्य का सहारा लेता है। यदि असत्य आचरण को न्याय से सजा दी जाने लगे तो अनैतिकता से न्याय-तन्त्र मुक्त हो सकता है।

—जगन्नाथ कौशल

शिक्षा का उद्देश्य जीवन-निर्माण है। केवल पुस्तकीय शिक्षा जीवन के लिए भारभूत हो जाती है। शिक्षा के साथ चरित्र विकास को मार्ग मिलता रहे तो कहीं भटकन का भय नहीं रहता। यह कार्य 'अणुव्रत' के योगदान से किया जा सकता है।

—ई० रा० नेडुजेओयन
राज्य शिक्षा मंत्री (मद्रास)

आचार्यश्री तुलसी का अणुव्रत-आन्दोलन देश के आचार को ऊंचा देखना चाहता है। यह पहले-पहल कुछ कडवा-सा लगता है, पर क्योकि हम अनैतिकता के ज्वर से ग्रस्त है इसलिए यह कडवी पर हितकर दवा हमे पीनी ही चाहिए। परिणाम मे यह मधुर सिद्ध होगी।

—डॉ० युद्धवीर सिह
अध्यक्ष, दिल्ली राज्य विकास समिति

वर्तमान मे अणुयुग की विभीषिकाओं से संत्रस्त लोक-जीवन को नही बल्कि आत्मा को त्राण देने का कार्य आचार्य तुलसीजी अणुव्रत के योग से कर रहे है। यह आन्दोलन संत्रस्त जीवन के लिए कल्याणकारी होगा।

—बसन्त साठे

अणुव्रत आज के युग की समस्याओ का समाधान है। अणुव्रत स्वीकार किए बिना कोई भी व्यक्ति सुख और शान्ति मे जी नही सकता। राजनेताओ, व्यापारियो और मजदूरो के लिए अणुव्रत की आचार-सहिता बहुत काम की है। इसलिए अणुव्रत का प्रचार-प्रसार ही नही, जीवन-व्यवहार मे उपयोग होना चाहिए। ऐसा होने से ही मानवता को त्राण मिल सकता है।

—केयूर भूषण

आचार्यश्री अपने विचारो और सिद्धान्तो पर हिमालय की भांति अडिग हैं। मैंने किसी भी परिस्थिति में आपको विचलित होते हुए नही देखा। आपके विचार और कार्यों ने लाखो को प्रभावित किया। आपकी भाषा विश्व-कल्याण की भाषा है। आपने अणुव्रत के द्वारा देश में जो अभियान चलाया है उसमे हम सबको अपना पूरा सहयोग देना चाहिए।

—डॉ० सरोजिनी महिषी

आचार्यश्री तुलसी भगवान् महावीर की जीवन्त परम्परा के प्रतीक हैं। पिछले तीस वर्षों से ये जीवन-मूल्यो को समाज मे लाने के लिए प्रयत्नशील हैं। इनका काम किसी सम्प्रदाय या वर्ग विशेष के लिए नही है। समूची मानव जाति इनके उपदेशो से उपकृत हुई है।

—केदार नाथ साहनी
मुख्यकारी पार्षद, दिल्ली

मात्र व्यापारिक शुद्धि के लिए ही नही वरन् प्रत्येक वर्ग की शुद्धि के लिए अणुव्रत परम लाभदायक है। यह राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण का प्रतीक है। हर वर्ग, हर जाति, हर राष्ट्र और हर व्यक्ति के लिए अणुव्रत उपयोगी है। जिन लोगो का विश्वास अहिसा मे है, सदाचार मे है, अणुव्रती बनना ही होगा।

—श्यामाचरण गुप्ता
पार्षद

'अणुव्रत' के ग्यारह नियम महात्मा गांधी के ग्यारह व्रतों से उपमित होते हैं। महात्माजी ने चरित्र-विकास का जो स्वप्न देखा था उसे 'अणुव्रतों' के द्वारा आकार मिल सकता है।

—के० आर० कल्याण रामन्

आचार्यश्री, गांधीजी की तरह राष्ट्र मे शुद्ध सकल्प जागृत कर रहे है। विश्व मे चल रही हिंसक स्पर्द्धाओ को मिटाने के लिए 'अणुव्रत' एक मौलिक प्रक्रिया है।

—डॉ० चन्द्रम्

आचार्यश्री तुलसी ने स्वस्थ समाज व देश की संरचना के लिए अणुव्रत का सूत्र दिया। आपका यह नैतिक अभियान समग्र विश्व की मानव जाति का पथ प्रशस्त करेगा।

—इन्द्र कुमार गुजराल

अणुव्रत का कार्य संजीवनी का कार्य है। मृत मानवता को पुनरुज्जीवित करने के लिए सफलतम उपाय है। आचार्यजी को किसी पद की नहीं, बल्कि मानव-कल्याण की लालसा है।

—जनरल करियप्पा

असाम्प्रदायिक और व्यापक दृष्टिकोण को सामने रखकर आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा जो कार्य किया है और कर रहे है। वास्तव मे आप जैसे महान् और कल्याणकारी व्यक्ति ही कर सकते हैं। आपका चिन्तन धार्मिक होते हुए भी युगीन धारा के साथ चलता है।

—के० एल० भगत

अणुव्रत लक्ष्य और भावना की दृष्टि से व्यापक और असाम्प्रदायिक है। इसी संदर्भ मे आचार्यजी के भावो को मैंने पढ़ा तो पाया—आप देश के हित मे उच्चतम विचारो के प्रतीक हैं। अणुव्रत का आन्दोलन एक नैतिक चेतना का आन्दोलन है। जन-मन आदर्श के मूल्यो की प्रतिष्ठा हो, यही इसका ध्येय है।

—नानाजी देशमुख

आचार्यश्री तुलसी एक जैन सम्प्रदाय के आचार्य हैं किन्तु साम्प्रदायिक भावना मे बहुत दूर हैं। आप अपने सम्प्रदाय के लिए ही नही, मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रयत्नशील है। देश के नैतिक स्तर को उन्नत बनाने के लिए आप अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा बडा काम कर रहे हैं। एक पदयात्री के रूप मे आपने देश के कोने-कोने मे भ्रमण किया है। अगर हम लोग शाति और सद्भावपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं तो हमे आचार्यश्री के विचारो को अपने जीवन मे उतारना ही होगा।

—प्रबोध भाई रावल

आचार्यश्री किसी एक पथ के आचार्य है पर आप साम्प्रदायिकता से बहुत दूर हैं। असाम्प्रदायिक, नैतिक और आध्यात्मिक व्यक्ति ही समाज को सही दिशा-दर्शन दे सकता है। महिलाओं को रूढ़िमुक्त करने मे और हरिजनों को आगे लाने मे आपने उल्लेखनीय काम किया है। आचार्यश्री ने महिलाओ को रूढिमुक्त किया है, स्वय को पहचानने की शक्ति दी है। समाज आपके उपकार को कभी विस्मृत नही कर सकेगा।

—श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत

आज का मनुष्य अनेक उलझनो से घिरा हुआ है। चारो ओर अशाति का वातावरण है। भौतिक सुविधाए बढ रही है। उसी क्रम से मनुष्य की अशाति भी बढ रही है। इसका अभिप्राय तो यही हुआ कि शाति धन-दौलत से मिलने वाली नही है। धन-दौलत तो एक प्रकार से अशाति के ही कारण बन जाते हैं। फिर भी हमारा व्यामोह छूटता नही है। आचार्यश्री ने अणुव्रत तथा प्रेक्षा-ध्यान के माध्यम से हमे एक रास्ता दिखाया है। अगर हम शाति चाहते हैं—बाहर की नही, भीतर की शाति चाहते है—तो हमे आचार्यश्री के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करना ही होगा।

—हीरालाल देवपुरा

तेरापथ का संविधान एक दुर्लभ संविधान है। आचार्य भिक्षु ने आज से लगभग सवा दो सौ वर्ष पूर्व ऐसे संविधान का सृजन कर एक नवीन क्रांति का सूत्रपात किया। आचार्यश्री तुलसी ने इस संविधान के अंतर्गत जो एकता, संयम और समर्पण का सूत्र दिया है। वह सांस्कृतिक स्थिरता का प्रतीक है। मैं आपके इन प्रयत्नों का हृदय से अभिनन्दन करता हूं।

—पुरुषोत्तम गोयल
अध्यक्ष, दिल्ली नगर परिषद

मुझे इस बात से बहुत प्रसन्नता है कि अणुव्रत-आदोलन नैतिक जागरण का संदेश है। इस आदोलन का उद्देश्य राष्ट्र के नैतिक चरित्र का विकास करना है। इन आदोलनो मे बहुत बड़ा महत्त्व इस बात का है कि प्रतिज्ञा और व्यवहार मे पूर्ण समन्वय बना रहे। जहा वैयक्तिक कार्य या स्वार्थ का सबध आता है, इन सिद्धातो से जुडे रहना कठिन पाया जाता है। यह आशा की जाती है, यह आदोलन जिन ऊचे सिद्धातो का प्ररूपण करता है, उनको जीवन-व्यवहार मे लाने व समन्वय बनाये रखने मे सफल होगा।

—सैयद अली जहीर

आचार्य तुलसी का अणुव्रत-आदोलन वस्तुत: देश मे नैतिकता और नियंत्रण के प्रचार का आदोलन है। इस बात की नितात आवश्यकता है कि नैतिक तथा आध्यात्मिक उपायो की यथार्थता तथा श्रेष्ठता व्यावहारिक रूप से सिद्ध की जाये। महात्मा गांधी के पश्चात् आचार्य विनोबा और आचार्यश्री तुलसी ने नैतिकता के सदेशवाहक का कठिन भार अपने कधो पर लिया है। हमे उनका अनुसरण करना चाहिए।

—अमरनाथ विद्यालकार

आचार्यश्री तुलसी का यह परिश्रम भारत की प्राचीन सभ्यता को पुनरुज्जीवित करने मे सफल हो रहा है और रहेगा। देश की स्वतंत्रता के भरण-पोषण के लिए जहा तमाम साधन जुटाने की आवश्यकता है वहा इस देश मे चरित्र-निर्माण का महान् कार्य चलाने की भी महती आवश्यकता है।

भारतवर्ष को आप जैसे हजारो तपस्वी साधुओ की परम आवश्यकता है। ताकि यह देश फिर से धर्म-परायण होकर ऊचे आदर्शों, अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए आपके बताये हुए मार्ग पर चल सके।

—बनारसीदास गुप्ता

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत-आन्दोलन का प्रवर्तन कर भारत के धर्म-गुरुओं के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण उपस्थित किया है। आज जबकि जाति, प्रात, भाषा व धर्म के नाम पर अनेकानेक झगडे खडे हो रहे है। स्वार्थ-भावना की प्रबलता है। साम्प्रदायिकता निष्कारण ही पनप रही है। आचार्यश्री तुलसी द्वारा नैतिक क्राति का आह्वान सचमुच ही उनके दूरदर्शी चिंतन का परिणाम है।

—प्रफुल्ल चन्द्र सेन

अणुव्रत के माध्यम से पंजाब से लेकर कन्याकुमारी तक नैतिकता का जो शंखनाद आचार्यश्री तुलसी ने किया है यदि उसमे हम सब लोग सहभागी बन जाए तो इस राष्ट्र का कायाकल्प हो सकता है। हमने अपने सामाजिक एव राष्ट्रीय दायित्व को एक प्रकार से भुला दिया है। इसलिए आज पग-पग पर हमारे सामने तरह-तरह की कठिनाइया उपस्थित हो रही है। इन कठिनाइयो का समाधान हम 'अणुव्रत' को स्वीकार करके ही कर सकते है। आज जो शक्तिया लोकतत्र धर्म-निरपेक्षता तथा समाजवाद की जड़ो को खोखला बना रही है, उनका सामना भी अणुव्रत के द्वारा बहुत अच्छे रूप मे कर सकते है।

—श्रीराम गोटेवाला

तू मुसलमा, तू है हिन्दु, सिख भी, ईसाई भी,
विराट् व्यक्तित्व के धनी आचार्य तुलसी श्री
तू संत भी, सूफी भी, तू इंसानियत का देवता
प्रेम की है बंसरी आचार्य तुलसी श्री
तू है मानव बेगुमां और मै हू मरदाना (शिष्य) तेरा,
तेरी महिमा है बडी, आचार्य तुलसी श्री !

—अहमद बख्श सिंधी

आचार्यश्री तुलसी ने जनता के मामने धर्म का सही रूप प्रस्तुत किया है। धर्म के नाम पर, भाषा और प्रात के नाम पर, समाज एव राष्ट्र मे जो बुराइया फैल रही हैं, आचार्यप्रवर ने उन पर तीव्र प्रहार किया है। एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होने हुए, आप साम्प्रदायिकता से कोसों दूर हैं। यही कारण है कि सभी जाति और सभी वर्ग के लोग आपके पास बड़ी प्रसन्नता के माथ आते हैं और आपसे कुछ प्रेरणा लेकर जाते हैं।

—रामनिवास मिर्धा

हमारे देश मे जनतंत्र को सुदृढ करने के लिए अणुव्रत से बढकर कोई साधन नही है। किसी भी जाति, वर्ग या सम्प्रदाय से सबधित व्यक्ति अणुव्रत को अपना मानकर स्वीकार कर सकता है।

—अमृतलाल याचक

मानवीय समस्याओ का हल राजनैतिक स्तर पर नही खोजा जा सकता। वह धर्म की बुनियाद पर ही खोजा जा सकता है। धर्म मानवता मे भेद नहीं करता। वह प्राणी मात्र की समानता मे विश्वास करता है। अणुव्रत-आन्दोलन सही अर्थ मे मानव धर्म का प्रतीक है।

—फारुख हुसैन

अणुव्रत-आदोलन का साराश हमारी सभी अच्छी प्रवृत्तियो को जागृत करना है। आज के सघर्ष के युग मे जब विश्व के सर्वोपरि योग्य और समृद्धिशाली वैज्ञानिक अधिक-से-अधिक विध्वसक साधनो को उपस्थित करने पर तत्पर हो, ऐसी परिस्थिति मे भारतवर्ष ही की आवाज चाहे कितनी ही हलकी क्यो न हो, सभी कानो मे गूजती है और ससार को आशा भी हमी से है कि हम इस प्रवाह के रुख को बदल सकेगे।

—मुनिदत्त उपाध्याय

अध्यापक किसी भी उद्देश्य से शिक्षक बने हो पर उन्हे अपने दायित्व को समझने की सबसे बड़ी आवश्यकता है और वे स्वय जब तक परोपकारी, सत्यवादी व चरित्रवान् नही होगे, बालको का भविष्य-निर्माण नही कर सकेंगे। नैतिक उत्थान की दृष्टि से आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का सबल दिया है जिसे पाकर हम जीवन मे नैतिकता का विकास कर सके।

— खेतसिह राठौर

गौरवशाली राष्ट्र के निर्माण के लिए महिलाओ का स्थान कम महत्त्वपूर्ण नही है। महिलाओ मे यदि अच्छे संस्कार नहीं होगे, तो वे अपनी संतान को सुसंस्कारित कैसे कर सकेंगी? आचार्यजी ने महिलाओ के लिए बहुत कुछ सोचा है तथा बहुत कुछ किया है।

—श्रीमती कमला बेनीवाल

…देश के प्रत्येक व्यक्ति को अणुव्रत-आन्दोलन की ओर ध्यान देकर अपने जीवन मे त्याग की भावना उत्पन्न करके नेक जीवन व्यतीत करने का निर्णय करना चाहिए। इस आन्दोलन के नियम देश के समस्त निवासियों पर लागू होते हैं। किसी भी धर्म अथवा मजहब से इनका टकराव नही। यदि समाज के प्रत्येक अंग मे स्वस्थता व पवित्रता होगी तो समस्त समाज स्वतः सुधर जाएगा व हम अपने देश मे अच्छा समाज बनाने मे सफल होगे। यह आन्दोलन एक समाज-सुधारक आन्दोलन है।

—मीर मुस्ताक अहमद

राष्ट्र की एकता और अखण्डता अणुव्रत के माध्यम से सुदृढ़ बन सकती है। आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत के माध्यम से देश की जनता को चरित्रवान् बनाने के लिए बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। देश में अणुव्रत के द्वारा नैतिक निर्माण का वातावरण बनाया जाए ताकि हमारा भविष्य उज्ज्वल हो।

—रामचन्द्र विकल

तेरापंथी समाज आचार्यश्री तुलसी के कर्मठ नेतृत्व और मार्गदर्शन में समाज के पुनरुत्थान के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। समाज में नैतिकता के गिरते मूल्यों को जीवन-व्यवहार मे लाने का प्रयास अणुव्रत के माध्यम से ही किया जा सकता है।

—गंगाशरण सिंह

सन्त

गरीबों और असहायों की सेवा करना मानव का धर्म है। हम सेवा करें लेकिन चरित्रवान् बनकर। चरित्र हमारे जीवन का आदर्श है, इसे सुरक्षित रखें। आचार्यजी मानव-समाज को चरित्र की बात बताते हैं। यह मानव-जाति के लिए गौरव की बात है। मैं सोचती हूं, दुनिया का हर आदमी चरित्रवान बनकर देश की सेवा करे।

—मदर टेरेसा

आचार्यश्री तुलसी ने संयम को सेवा-कार्यों से जोड़ने का कार्य अपनी विशिष्ट पद्धति से चलाया, जिसका प्रभाव जीवन के अनेक क्षेत्रो मे पड़ा है और पडेगा।

—आचार्य विनोबा भावे

आचार्यजी भारतीय सन्त-परम्परा मे विशिष्ट कोटि के सन्त हैं। आप द्वारा मानव-कल्याणकारी प्रवृत्ति धर्म की सुरक्षा के लिए सबल है। भगवान् बुद्ध और महावीर की समकालीन परम्परा आज भी जीवंत है। उनके उपदेशो को जन-जन तक पहुचाने का प्रयास सफल हो।

—दलाई लामा
बौद्ध भिक्षु

आचार्यश्री एक पवित्र आत्मा है। उन्होने मानवता के लिए अब तक जो भी कुछ किया है और करते है, वह अभिनन्दनीय है। आज अपेक्षा इस बात की है कि लोग आचार्यश्री के बनाये हुए मार्ग पर चले। उनके विचारों को जीवनगत करने से ही सपूर्ण राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। आज समूचे विश्व मे भौतिक साधनो की प्राप्ति के लिए जो अधी-दौड चल रही है, उसके सम्मुख आचार्यश्री तुलसी ने लाल बत्ती बतलाकर सच्चा सुख कहां है, इसके लिए 'अणुव्रत' के माध्यम से मार्गदर्शन किया है।

—रविशकर महाराज

आचार्यश्री ने देश और काल की भिन्न समस्याओ का अध्ययन किया है। अध्ययन के बाद सदाचार एव चरित्र गठन के लिए 'अणुव्रत' का प्रचार कर रहे हैं। यह कार्य भारत के लिए ही नही, विश्व के लिए प्रेरणादायी है। जीवन के बाह्य एवं आन्तरिक पहलुओ मे 'अणुव्रत' के द्वारा संतुलन स्थापित किया जा सकता है। यह आन्दोलन जीवन-दर्शन एवं समाज-व्यवस्था की पृष्ठभूमि है।

—जगद्गुरु योगेन्द्र महास्वामी

भगवान् महावीर ने क्षत्रिय कुल मे जन्म लिया, किन्तु उन्होने सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण किया है। महावीर की वाणी से ही हम सबका कल्याण है। भगवान की वाणी मिथ्या, माया और अहकार से रहित है। आचार्यश्री तुलसी का विचार हमेशा एकता के लिए रहता है। आज उनका प्रयास सफल हो रहा है। आगे और भी सफल होना चाहिए।

—आचार्य देशभूषण
(दिगम्बर)

श्रमण-संस्कृति मे पद-यात्रा को भारी महत्त्व दिया है। इससे गरीबों की झोंपडी मे भी सरस्वती के पद-चिह्न अंकित होते हैं। आद्य शंकराचार्य ने कन्याकुमारी से हिमालय तक पद-विहार करके भारत के लोक-जीवन मे ज्ञान का आलोक जगाया। आचार्य तुलसी ने अल्पकाल मे ही सम्पूर्ण भारत की पदयात्रा कर अध्यात्म से प्रेरित लोक-कल्याणकारी भावनाओं का संकलन किया है और भारतीय जीवन मे नैतिक शक्ति का संचार किया है।

—एलाचार्य विद्यानन्द

आचार्यश्री तुलमी ने आज के भौतिकता प्रधान युग मे धर्म अर्थात् आध्यात्मिकता के पुनर्जागरण के लिए जो शंखनाद किया है, वह धर्म संस्थापन के समय-समय पर होने वाले दैवी प्रयासो की शृंखला की ही एक कड़ी है।

मैं इस प्रयास के प्रति शुभकामना प्रकट करता हूं।

—उपाध्याय अमरमुनि

आज देश मे सबसे पहली जरूरत है शान्ति की। इस समय देश मे हिंसा के बादल छाए हुए हैं। ऐसे समय मे जरूरत है आचार्यश्री तुलसी-जैसे महान् संतो की। मुझे प्रसन्नता होगी कि मैं भी इस कार्य मे अपना कुछ योग दे सकू।

हमारा विश्वास देश की एकता और अखण्डता मे है, खालिस्तान मे नही। देश की एकता और अखण्डता के लिए हमने भारी कुर्बानी दी है और भविष्य मे भी बडी से बड़ी कुर्बानी देने मे हम किसी से पीछे नही हटेंगे।

आज देश की सबसे बड़ी समस्या उसकी एकता और अखण्डता की है। इसे बरकरार तभी रखा जा सकता है, जब आचार्यश्री तुलसी-जैसे सत और उनकी शिष्य-मडली यहां बैठे तथा ग्रामो मे जाकर शान्ति और अमन के लिए काम करे। आचार्यजी के प्रयास से देश की एकता और अखण्डता को बहुत बल मिलेगा और हम भी पूरा-पूरा सहयोग करेंगे।

—हरचन्द सिंह लोंगोवाल
अध्यक्ष, अकाली दल

संसार मे हजारो धार्मिक नेता पैदा हो चुके है, और पैदा होगे। परन्तु उनमे कुछ ऐसे भी है, जिन्होने लोगो के हृदय-परिवर्तन किए है, ससार मे प्रेम और शान्ति के स्रोत वहाये है। बीसवी सदी मे हमारी इन आखो ने भी एक ऐसे ही महापुरुष आचार्यश्री तुलसी को देखा है।

यही वह व्यक्ति है जिसके पवित्र जीवन मे जैनी भगवान् श्री महावीर को देखते है और बौद्ध भगवान् बुद्ध को देखते हैं। हम जो महाप्रभु यीशु ख्रीस्ट के अनुयायी है, यीशु ख्रीस्ट की ज्योति भी उनमे देखते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने महाप्रभु यीशु ख्रीस्ट के उस कथन 'अपने वैरियों से भी प्रेम करो' को इतना सुन्दर रूप दिया है कि विरोध को विनोद समझकर किसी की ओर से मन में मैल न आने दो।

आचार्यश्री ने हर जाति के और धर्म के लोगों को ऐसा प्रभावित किया है कि आपके आदर्श कभी भुलाए नही जा सकते और वे सदा ही मनुष्य जाति को जीवन ज्योति दिखाते रहेगे।

—महामहिम मार अथ नेशियस
जे० एस० विलियम्स

आचार्यश्री तुलसी एक अर्थ मे आधुनिक भारत के सुकरात हैं। आपके सन्देश का आज के मानव के लिए यही आशय है कि वह स्वयं अपने लिए अपनी अन्तरात्मा के अंतिम सत्य का पता लगाए। यही देवत्व का सिद्धान्त है ! उन्होने स्वयं पूर्ण दर्शन की स्थापना की है। जिसके द्वारा मनुष्य आत्मज्ञान के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

अणुव्रत उनके व्यावहारिक दर्शन का माप है। और वह आज के अणु-अणु के सर्वथा उपयुक्त है। आचार्य तुलसी ने इस वैज्ञानिक सत्य का मनुष्य के नैतिक और आध्यात्मिक प्रयास के क्षेत्र मे प्रयोग किया है।

उनका सन्देश सब युगो के लिए और सारी मानव जाति के लिए है !

—महर्षि विनोद
(न्यायरत्न दर्शनालंकार)

बौद्ध परम्परा मे भगवान बुद्ध और जैन परम्परा मे भगवान महावीर भारतीय संस्कृति के प्रकाश-स्तम्भ के रूप मे हैं। दोनो ही महापुरुषो ने मानव कल्याणकारी सन्देश दिया। आचार्य तुलसीजी भी इसी भावना को लेकर पैदल यात्रा करते है, आचार्यजी का अणुव्रत मिशन विश्व को नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इस मिशन की आवाज जन-जन तक पहुचे।

—भदन्त आनन्द कौशल्यायन

आचार्यश्री तुलसी ने व्रतो की एक सुगम विधि को अणुव्रत के रूप में प्रस्तुत किया है। इनके माध्यम से जनता को चरित्र की शिक्षा दी। आज भौतिकवाद की ज्वाला मे जलते हुए मानव समाज को बचाने के लिए अणुव्रत ने जो सयममय जीवन का उद्घोष दिया है वह अपने आप मे भविष्य का सुखद निर्माण करने वाला अमोघ मन्त्र है।

—स्वामी नारदानन्द सरस्वती
नैमिषारण्य

आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन अत्यन्त प्रशंसनीय है और सही रास्ते पर चलने मे सहायता प्रदान करता है। सह-अस्तित्व के लिए यह आन्दोलन निश्चित ही बहुत सहायक होगा अत: समग्र मानव जाति सत्य के इस पवित्र बन्धन से आवद्ध होगी, ऐसी हम कामना करते हैं।

—परिव्राजकाचार्य श्री रघुवल्लभ
तीर्थस्वामी, उडीपी

आचार्यश्री तुलसी अपने आप मे एक संस्था हैं और प्राचीन काल के ऋषियो द्वारा प्रदत्त हमारी सभ्यता के सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ और अत्यधिक प्रकाशमान पहलुओ का प्रतिनिधित्व करते है। आध्यात्मिक श्रेष्ठता की अगम्य गहराइयो मे पैठकर मोती निकालने का जो काम वे कर रहे हैं। वह लौकिक मस्तिष्क की पहुच के परे की बात है!

आचार्यश्री सद्भावना एव पारस्परिक विकास पर आधारित दया और क्षमा के सर्वोत्तम गुणो का प्रसार कर इस समय विद्यमान घोर अधकार मे सुन्दर मार्गदर्शन कर रहे है। अणुव्रत आन्दोलन मे उन्ही ऊंचे आदर्शों का समावेश है जो उनके अपने जीवन मे फलीभूत हुए हैं।

—एच० एच० श्री विश्वेश्वर तीर्थस्वामी

मानव का उत्कर्ष, मानवता के मूल्य तथा उसकी पूर्णता भौतिकवाद के संघर्षमय तथा शोषणमय जीवन मे कदापि नही हो सकती। अपनी सहन-शक्ति द्वारा शत्रु का हृदय बदल जाए और वह शत्रुता छोड दे, मित्र बने, इस ऊंची संस्कृति का उदय हो रहा है। इन विचारो की विजय के लिए राष्ट्र के बच्चे-बच्चे मे चरित्र-निर्माण होना बहुत ही आवश्यक है। आचार्य तुलसीजी ने अणुव्रत आन्दोलन द्वारा चरित्र-निर्माण के कार्य मे महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है।

—राष्ट्र सन्त तुकडोजी

भौतिकवाद के इस युग मे जबकि जनसाधारण का जीवन नैतिक ह्रास और पतन की ओर जा रहा है, यह सर्वथा उपयुक्त है कि उस पतन को रोका जाए और लोगो के सम्मुख नैतिकता के महान् समृद्ध आदर्शों को प्रस्तुत किया जाए। ऐसा आदर्श प्रस्तुत करने का भगीरथ कार्य अणुव्रत आन्दोलन कर रहा है। अपेक्षा है कि जनता इस अभियान को समझे और अपने जीवन मे पवित्र ज्योति जगाए।

—विद्यारत्न तीर्थ श्रीपाद

भारतीय संत परम्परा की अभिव्यक्ति स्पष्टत. अणुव्रत आन्दोलन में परिलक्षित होती है। जनतत्र मूलक युग के लिए अणुव्रत एक ऐसी आचार पद्धति है जिसके परिचालन द्वारा गृहस्थ स्वय सदाचारमय आत्मलक्षी जीवन यापन करते हुए भी महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय विकास कार्यों मे भी न केवल सक्रिय योग ही दे सकता है, अपितु दर्शन के प्रकाश मे ज्ञान द्वारा चरित्र की सुदृढ़ परम्परा भी स्थापित कर सकता है।

—मुनि कान्ति सागर

आचार्यश्री स्वतन्त्र भारत मे नैतिक पुनर्जागरण का काम कर रहे हैं। हमारे राष्ट्र की नींव मे नैतिकता का शीशा ढालना होगा। अणुव्रत के द्वारा यही किया जा रहा है। यह चरित्र की अमृतधारा है। इस अमृतधारा का पान कर जीवन को पवित्र बनाएं। नैतिकता के पुनर्जागरण के लिए और विनाश से बचने के लिए एक क्रान्तिकारी शान्त आन्दोलन की अपेक्षा है। अणुव्रत इस अपेक्षा की पूर्ति है।

—कुमार स्वामी

भारत वैदिक और उपनिषदीय गाथाओ का देश है, किन्तु उसे राजनैतिक पराधीनता से मुक्त होने के पश्चात् अब इस अणुव्रत आन्दोलन की आवश्यकता है। भारत अत्यन्त प्राचीन आध्यात्मिक परम्पराओ का धनी है, किन्तु यदि हमारे राष्ट्र को दूसरे-दूसरे देशों को आध्यात्मिक मूल्य सुलभ करने की आकाक्षा की पूर्ति करना हो तो उसे आत्म-निरीक्षण करना होगा। आत्म-साक्षात्कार जीवन का मूल लक्ष्य है। इस लक्ष्य पर आचार्यश्री तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन साधन चतुष्टय की प्राप्ति मे बडा सहायक होगा और आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त करेगा।

—टी. एन० वेंकट रमण
अध्यक्ष, रमण आश्रम

आपने विभिन्न धर्मों के मध्य समन्वय का सूत्र पिरोकर एकता की दिशा में जो काम किया है वह इस युग को आपकी बहुत बड़ी देन है। आप मानव जाति के लिए जो महत्त्वपूर्ण काम कर रहे है, वह आज की अपेक्षा है।

—सन्त कृपाल सिंह

हम सभी लोग दोहरे मानदण्डो मे जी रहे है। यही कारण है कि चिनगारी को कपास के ढेर मे छिपाकर कहते हैं कि अब शान्ति है। आग की कहीं आशका नही है। यही सबसे बडी समस्या है। आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति म समता का सचरण करने का प्रयास कर रहे है। यही आज के युग की अपेक्षा है। यही उनका सबसे बड़ा रचनात्मक कार्य है।

—मुरली मनोहर शरण शास्त्री
मेवाड़, मण्डलेश्वर

तेरापथ का अनुशासन, एकता और मर्यादाएं विलक्षण है। आप सात सौ से अधिक साधु-साध्वियों के आचार्य हैं फिर भी निश्चिन्त रहते है, यह आश्चर्य की बात है। हम तो दस-बीस साधुओ को सभालकर रखने मे कठिनाई प्रतीत हो रही है। आप यह सब कैसे कर लेते है। लगता है, इस कलियुग मे भी आपके यहा सतयुग चल रहा है। तेरापथ इस युग का महान् आश्चर्य है। तेरापथ धर्मसघ के लिए आचार्यश्री तुलसी का कार्य-काल स्वर्णिम काल है।

—पन्यासश्री अभयसागर गणी

पैसे वाले हजारो मिलेगे, रंग-रूप वाले हजारो मिलेगे किन्तु अपने विचारों का समुचित उपयोग करने वाले कम लोग मिलेंगे। आचार्यश्री तुलसी हमारे सामने विद्यमान है। इनकी कथनी और करनी मे कोई अन्तर नहीं है। हम सभी लोगो को आचार्यश्री के महान् कार्य-कलापो से प्रेरणा लेनी चाहिए।

—मुनि कस्तूर चन्द
(स्थानकवासी)

यदि कोई व्यक्ति इस युग में धर्म का स्पर्श करना चाहता है तो उसे आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन के नियमो को धारण करना होगा। आचार्यश्री वर्तमान युग की एक महान् विभूति हैं। आपके मार्गदर्शन मे जैन धर्म की जो प्रभावना हुई है तथा हो रही है, उसे भुलाया नही जा सकता है।

—मुनि दयानन्द विजय जी
(मूर्तिपूजक)

इरादे तो है मंजिल के पर चलना नही आता,
कहना तो सभी को आता है मगर करना नही आता।

आचार्यश्री तुलसी एक यशस्वी एवं कुशल आचार्य है। आपके कुशल नेतृत्व में तेरापथ धर्मसंघ ने जो प्रगति की है, उससे कौन अनभिज्ञ है? अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन कर आपने समस्त मानव जाति का कल्याण किया है।

—मुनि नित्यानंदजी
(मूर्तिपूजक)

जैन एकता का जो स्वरूप क्रमशः विकसित हो रहा है वह सदा कायम रहना चाहिए। महावीर ने समन्वय और सह-अस्तित्व का सिद्धान्त दिया। इस सिद्धान्त को जन-जन तक पहुंचाने का तीव्र प्रयत्न होना चाहिए। वह चाहे महाव्रत के माध्यम से पहुंचे या अणुव्रत के माध्यम से। युग जहा विनाश के कगार पर है वहा सह-अस्तित्व का संदेश अत्यन्त आवश्यक है।

—**मुनि सुशील कुमार**

अन्तर्राष्ट्रीय जगत् मे अणुव्रत आन्दोलन प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। आचार्यश्री के नेतृत्व मे यह आन्दोलन सारे देश मे प्रगति कर रहा है। आपका ध्यान देश के नैतिक पुनरुत्थान की ओर गया तथा सार्वभौम आधारो पर नैतिक व्रत की एक सर्वमान्य आचार-सहिता प्रस्तुत की।

डॉ० बुकमैन के आन्दोलन के समान विचारधारा वाले अणुव्रत आन्दोलन ने जन-चेतना को जगाने का प्रयास किया है। ऐसे आन्दोलन भारतीय संस्कृति के गौरव है।

—राम कृष्ण भारती

चिन्तक-साहित्यकार

अणुव्रत का अर्थ है—प्रत्येक व्रत का अणु से लेकर सब व्रतों का क्रमश. बढता हुआ पालन। उदाहरण के लिए कोई आदमी जो अहिंसा और अपरिग्रह मे विश्वास रखता है, लेकिन उसके अनुसार चलने की ताकत अपने मे नही पाता, इस पद्धति का आश्रय लेकर किसी विशेष हिंसा से दूर रहने या एक हद के बाहर और किसी खास ढग से सग्रह न करने का संकल्प करेगा और धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढेगा। ऐसे व्रत अणुव्रत कहलाते है।

—किशोरलाल घ० मश्रुवाला

श्रमण और भिक्षु शक्ति सेना के सैनिक। नैतिक प्रचार और प्रसार के लिए उन्होने जीवन को जगाया है। यह उचित है अणुव्रत-आन्दोलन मे नैतिक विचार क्रान्ति के साथ-साथ बौद्धिक अहिंसा पर भी बल दिया गया। यह इसकी अपनी विशेषता है।

—काका कालेलकर
राष्ट्र के सुप्रसिद्ध विचारक

अणुव्रत आन्दोलन धर्म को जीवनव्यापी बनाने का प्रेरक सूत्र है। भौतिकता के इस युग में बलिदान, सयम और सदाचार की एक चिनगारी हमे नजर आ रही है। उसने हमारे अन्धकारपूर्ण मार्ग को प्रशस्त किया है। वह चिनगारी है—अणुव्रत आन्दोलन। इस आन्दोलन ने हमे एक परिवर्तन दिया है, एक दिशा दी है और एक गति प्रदान की है। अणुव्रत आन्दोलन का आधार है—आत्म-विजय, आत्म-संयम। अहिंसक समाज-रचना की जो कल्पना आचार्य तुलसी के मन मे है, वह रूप लेगी और आत्म-संयम की बलिवेदी पर मर मिटने वाले लोगो का संगठन प्रस्तुत करेगी।

—सुमति कुमार चटर्जी

अणुव्रत आन्दोलन का आज देशव्यापी प्रभाव है। यह उसकी तपस्याओं और सुचारित प्रवृत्तियो का परिणाम है। काम भी बहुत हुआ है लेकिन उसके व्यवस्थित तारतम्य का अभाव है। नैतिक समाज-सरचना के लिए अणुव्रत के विविध कार्यक्रमो के रचनात्मक स्वरूप के साथ अणुव्रत संगठन की पहली और महती आवश्यकता है। हमे सर्वप्रथम इसी बुनियादी पक्ष पर विचार करना है।

—गुरु गोलवलकर

मेरे मन पर आपका अमिट प्रभाव है। आज राष्ट्र की ज्वलंत समस्या है। चारित्र का अभाव इस समस्या का समाधान तथ्य है। ऐसी स्थिति मे आचार्यश्री ने अणुव्रत के माध्यम से हम सब लोगो को ऐसा रास्ता दिखाया है। सामाजिक जीवन पर अणुव्रत का प्रभाव निश्चित रूप से पडा है और भविष्य मे भी पड़ेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

—बाला साहब देवरस
सर सघ चालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

धर्म का काम है सोये हुए व्यक्ति को जगाना। जागने का अर्थ है, जीवन को सही दिशा की ओर ले जाना। इसके लिए हमे अपने पर नियंत्रण करना होगा। श्री विनोवाजी का भी यही लक्ष्य था। मै मानता हूं कि आचार्य तुलसीजी का भी यही लक्ष्य है। आपने अणुव्रत के द्वारा जीवन-निर्माण की बात कही है। अणुव्रत और सर्वोदय दो नाम है मगर विचार-धारा मे समान है।

—शिवाजी नरहरि भावे

अणुव्रत वर्ग-भेद की समाप्ति पर बल देता है, यह प्रयास भारत के लिए गौरव की बात है। आचार्यजी-जैसे सन्त पुरुष ही यदि ऐसा प्रयास करें, तो ही भारत से वर्ग-भेद की समाप्ति का स्वप्न लिया जा सकता है। वरना यह कार्य बेहद कठिन है।

—डॉ० राममनोहर लोहिया

स्पुतनिक के इस युग मे हम विज्ञान द्वारा प्राप्त महान् सफलताओ और प्रकृति पर मानव के प्रभुत्व की बात सुनते है। किन्तु साथ ही हम नयी खोजो की बुराइयो से भयभीत है! जो मानव-जीवन का ही अस्तित्व समाप्त कर सकती है। अराजकता की इस स्थिति मे आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत आन्दोलन के रूप मे दुनिया की सब बुराइयो का एक समाधान प्रस्तुत करते है। जो सर्व सम्मत है, वह है—आत्मशुद्धि का वह प्राचीन सन्मार्ग जो मनुष्य के जीवन को सुखद बना सकता है।

—भारतरत्न महर्षि डी० के० कर्वे

अणुव्रत आन्दोलन वास्तव मे असाम्प्रदायिक आन्दोलन है और उसको हमारी धर्म-निरपेक्ष सरकार का भी समर्थन मिलना चाहिए। यदि इस आन्दोलन के मूलभूत सिद्धान्तो की नयी पीढ़ी को शिक्षा दी जाए तो वे बहुत अच्छे नागरिक बन सकेंगे और वास्तव मे विश्व-नागरिक कहलाने के अधिकारी हो सकेंगे। इस प्रकार का आन्दोलन राष्ट्रीय एकता के ध्येय को अधिक शीघ्रतापूर्वक सिद्ध कर सकेगा।

—प्रो० एन० वी० वैद्य
पूना

आज लोग बाह्य शक्तियो की ओर आकर्षित हैं, किन्तु जो सफलता आध्यात्मिक शान्ति से मिलती है वह भौतिक समृद्धि से नही । भारतवर्ष हमेशा से ही अपनी आत्मीय शक्ति पर ही निर्भर रहता आया है। अणुव्रत आन्दोलन एक आध्यात्मिक सन्देश का द्योतक है और आशा है यह आन्दोलन सारे देश की प्रतिष्ठा उन्नत करेगा और जन-जन में नैतिक प्रेरणा देने वाला होगा ।

—सेठ गोविन्ददास

आणविक युद्ध रोकने का एक मात्र उपाय अणुव्रत साधना है।युद्ध युद्धों को नही रोक सकते। मरण के साधनो से जीवन नही मिल सकता।

आचार्यश्री तुलसी ने हमे इस दिशा मे, आप्त जीवन मे अमृत-सीकर की तरह नयी दृष्टि दी है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, क्षमा दया के अक्षय अस्त्र देकर आजीवनीय तत्त्वो से संघर्ष करके जीवन का प्रतिष्ठा प्रण दान किया है।

आचार्यश्री तुलसी के चिन्तन से निकले अणुव्रत के उद्‌गार निरन्तर हमारे लिए चिरसुख का कारण बने।

—उदय शकर भट्ट

आचार्यश्री राष्ट्र की सुपुप्ट आत्मा का, जागृति को सन्देश दे रहे है। अणुव्रत और अणुबम दोनो का उद्गम अणु है। भारत की धरती ने अणु से अध्यात्म पनपाया और विदेशो मे अणु की निष्पत्ति हिंसा के रूप मे की। आचार्यश्री ने अहिंसात्मक प्रतिकार की दिशा मे अणुव्रत की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया है। यह आन्दोलन देश के नव-निर्माण मे सहयोगी बनेगा।

—श्रीमती अनन्त नायकी

हमारा सांस्कृतिक इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे देश मे जीवन के अन्तर्द्रष्टा जन-जीवन की ज्योत्सना को चिर प्रज्वलित और चैतन्य को जागृत बनाए रखने के लिए जो कार्य सत्य साधनो को अपनाकर करते रहे है, वह निस्संदेह स्तुत्य है। हमारे अन्तर मे आध्यात्मिक एव आत्मिक तत्त्वो को जिस सातत्य और सात्विकता के साथ आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत-आन्दोलन के माध्यम मे जागृत किया है, वह निश्चय ही महान् और आदरणीय है।

आचार्यश्री के दर्शनो का एवं उनके साथ विचार-विमर्श का सुअवसर मुझे भी मिला। मैं समझता हू कि उन्होने समाज के मूलभूत धरातल को कभी भी दृष्टि से ओझल नही होने दिया है और जनमानस मे सदाचार और नैतिकता की अनिवार्यता को प्रतिष्ठापित करने के लिए सतत् साधना की है क्योकि उन्हे सुविदित है कि इकाई अणु की तरह लघु और अदृश्य होते हुए भी महान् शक्ति का आदि स्रोत है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अणुव्रती भाई इस आन्दोलन को और भी अडिग निष्ठा और तीव्र गति के साथ आगे बढायेगे।

—सत्यप्रकाश मिलिन्द

विश्व मे शांति का साम्राज्य हो सके, परस्पर सौहार्द्र की सद्भावना को जगा पृथ्वी पर स्वर्ग लाया जा सके और ऐसे नवयुग का दर्शन हो सके, जहा शोषण न हो, उत्पीड़न न हो, वंचना न हो इस दिशा में आचार्य तुलसी की विश्व को अणुव्रत के रूप मे एक अनुपम देन है।

—देशमित्र

भारतवर्ष सौभाग्यशाली है कि यहां समय-समय पर कोई युगपुरुष हमारी सुप्त चेतना को उद्बुद्ध करने के लिए समाज मे आते रहे हैं। उन युग पुरुषो की कड़ी मे मैं आचार्यश्री तुलसी को देखता हूं। आप अणुव्रत के द्वारा अनैतिकता के विरुद्ध लोकमत तैयार करते हैं। समाज मे इसी चेतना के जागरण की आवश्यकता है। आचार्यश्री तुलसी चैतन्य को जागृत करना चाहते है। यह कार्य होने के अनन्तर समाज की बद्ध मूल अनैतिकताएं चाहे वे ज्वालामुखी क्यों न हो स्वतः ही निरसन की ओर हो जाती हैं।

—डॉ० ए० के० मजूमदार

अणुव्रत आन्दोलन के सिद्धान्त मानव को सद् आचरण का मार्ग दिखाने वाले हैं, चाहे वह किसी भी धर्म अथवा राष्ट्र से सम्बधित क्यो न हो। इस रूप मे अणुव्रत आन्दोलन को विश्व धर्म का प्रतीक माना जा सकता है। इस आन्दोलन को इसी व्यापक दृष्टि से चलाया जायेगा तो समस्त मानव जाति का उत्थान हो सकेगा।

—चपलाकान्त भट्टाचार्य

आचार्यश्री तुलसी बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति हैं। लौकिक बुद्धि के साथ-साथ उनमे महान् आध्यात्मिक गुणों का समावेश है। आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न हैं जिसका न केवल आत्मशुद्धि के लिए बल्कि मानव जाति की सेवा के लिए भी वह पूरा उपयोग करते हैं।

लोगों मे व्याप्त नैतिक अधःपतन को देखकर उन्होंने सारे राष्ट्र में पुनीत अणुव्रत आन्दोलन शुरू किया है। जीवन के आध्यात्मिक मूल्यों के प्रतिपादन में उनका उत्साह सराहनीय है। महान् अशोक से उनकी तुलना की जा सकती है जिसने अहिंसा के सिद्धान्त की शिक्षा और उसके प्रसार के लिए अपने दूतो को सुदूर देशों मे भेजा था। सर्वोदय नेता के रूप मे महात्मा गांधी से भी उनकी तुलना की जा सकती है।

—के० एस० धरणेन्द्रय्या

चिकित्सा के लिए तीन औषधियां बतलायी इस नैतिक भिषग शिरोमणि ने—नैतिकता, अध्यात्म और संयम। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का सरल और सुपाच्य पचामृत अणुव्रत के नाम से पीड़ित विश्व के गले मे डालते हुए इस मानवता के जयघोषक ने उद्घोषणा की—अणुव्रत आन्दोलन एक नैतिक क्रान्ति है। इसका उद्देश्य है मनुष्य का आध्यात्मिक सिंचन। अध्यात्म के द्वारा चरित्र की सुदृढ़ स्थापना तथा मैत्री द्वारा शान्ति की रक्षा। यह आन्दोलन जन-जन का दिशा-दर्शक बने। शान्ति की रक्षा करे।

—एन० एम० झुनझुनवाला

आज का विज्ञान जिन विश्व-शक्तियो के हाथों मे पड़कर मानव के संहार का निमित्त बन गया है, उसके पास शक्ति और साधनों की कोई कमी नही है। उनकी अपार शक्ति का मुकाबला केवल विश्वास और संकल्प की महान् शक्ति से ही किया जा सकता है। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी उस विश्वास और संकल्प के ऐसे प्रतीक हैं जो दूसरों में भी निरन्तर उस विश्वास और संकल्प को पैदा करते रहते हैं। चुम्बक जैसे लोहे मे से अपनी शक्ति का संचार कर उसमे दूसरे लोहे को अपनी ओर खीचने की आकर्षण शक्ति भी एक-दूसरे को आकर्षित करने की क्षमता अपने मे रखती है। यह कौन न चाहेगा कि इस शक्ति का चारो ओर सचार न हो और वह मानव मे उस शक्ति को भर दे जिसके सम्मुख अणु शक्ति का सहारक रूप क्षीण पड जाए।

—सत्यदेव विद्यालंकार

अणुव्रत आन्दोलन व्यक्ति-सुधार के माध्यम से चलने वाला एक सफल कार्यक्रम है। यदि व्यक्ति दुरुस्त तो समाज दुरुस्त, राष्ट्र दुरुस्त। यदि व्यक्ति सुधार हुआ नही तो समाज या राष्ट्र सही माने मे सुधरा हुआ नहीं कहा जा सकता क्योंकि व्यक्ति ही तो समाज या राष्ट्र की रीढ है। अणुव्रत व्यक्ति-निर्माण की प्रेरणा देता है।

—गोपीनाथ अमन

आज हमारे देश को चरित्र-निर्माण के लिए एक अनुकूल अवसर प्राप्त है पर हम उसका सही लाभ तभी ले सकेंगे, जब हम अपनी सोई हुई आत्म-शक्ति को जगा उसे जीवन-निर्माण के कार्य में लगा देंगे। अणुव्रत आन्दोलन से हम यही तो सीखते हैं।

—श्रीमती मदालसा देवी
प्रमुख महिला कार्यकर्त्री, दिल्ली

प्रत्येक व्यक्ति धर्म की दुहाई देता है किन्तु धर्म का आचरण नहीं करता। मैं चाहती हू---धर्म के नाम की जगह धर्म का काम हो। कानून से सर्वोदय नही हो सकता। व्रतो से ही ऐसा सम्भव है।

अणुव्रत आन्दोलन जीवन के मूल्यो को बदलता है। हृदय और बुद्धि का समन्वय हो, आचार और विचार का समन्वय हो, कथनी और करनी का समन्वय हो—यही अणुव्रतो का ध्येय है।

—डॉ० सुशीला नैयर
एम० पी० (गाधीवादी कार्यकर्त्री)

गांधीजी ने सत्य, अहिंसा को व्यापक बनाया। उन्हीं के सिद्धान्त को 'अणुव्रतों' के माध्यम से व्यावहारिक रूप देने के लिए अणुशस्त्रों के विरुद्ध आन्दोलन की चर्चा चलाई जा रही है। अणुबम का बीज स्वार्थ में है। स्वार्थ भावना के अन्त का संकल्प ही अणुअस्त्रों का अन्त है।

—शंकर राव देव

हमारा सामाजिक ढांचा ही दूषित होता जा रहा है। लोगो की प्रवृत्ति धन-संग्रह की ओर बढ़ती जा रही है। फलस्वरूप नैतिक मूल्य गिरते जा रहे है। आज आवश्यकता है नैतिक मूल्यो को प्रोत्साहन देने की। अणुव्रत आन्दोलन ने इस दिशा मे एक नैतिक चेतना दी है।

—कृष्ण चन्द्र विद्यालंकार

आचार्य तुलसी सचमुच युग-प्रवर्तन का कार्य कर रहे हैं। शास्त्रागम को ग्रन्थवाद से उबारकर निर्ग्रन्थता प्रदान की है। जीवन के आशय को धर्म-सूत्रों मे सन्निवेश किया है। मानो धर्म को ही जाग्रत और जीवन को बनाने मे योग दिया है।

आजकल की सभ्यता आर्थिक और राजनीतिक है। अब तक यह विकास पाती गई है। ज्ञान-विज्ञान का अभूतपूर्व आविष्करण इस काल मे हुआ है। लेकिन स्वयं विज्ञान उन्नति पाते-पाते ऐसी जगह पहुच गया है, जहां नैतिक मूल्य की अबाध्यता उसे स्वीकार करनी पडती है।

आचार्य तुलसी इस युगीन सम्भावना को पहचानते हैं और उस सकट के निवारण के लिए पूरी तौर पर उद्यमशील है।

—जैनेन्द्र कुमार
साहित्य मनीषी

ऐतिहासिक प्रमाण सिद्ध करते हैं कि अनैतिकता दूर करने के लिए सरकार द्वारा हिंसात्मक प्रयोग असफल हुआ है, नैतिक मूल्य गिरते जा रहे हैं। अत: नैतिकता के विकास के लिए हमे सामाजिक मूल्यों को बदलना होगा। अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से व्यापारियों, विद्यार्थियों तथा राज्य कर्मचारियो मे कुछ नैतिकता सम्बन्धी कार्य हुआ है, परन्तु इस कार्य को और भी बढ़ावा मिलना चाहिए।

—प्रभाकर माचवे

…आज के भ्रष्टाचार से पीड़ित युग मे अणुव्रत आन्दोलन का स्वर मरणासन्न मानव के मुख मे अमृत डालने जैसा है । एक ओर जहा अणुबम के पीछे मनुष्य की बुद्धि विश्व को समूल नष्ट कर देने की धमकी दे रही है, वही अणुव्रत-आन्दोलन के पीछे मनुष्य का विवेक मानवता की रक्षा के लिए सम्बद्ध हो उठा है । भले ही विवेक का यह स्वर अभी क्षीण हो पर उसका होना ही आशाप्रद भविष्य का सूचक है ।

—विष्णु प्रभाकर
(सुप्रसिद्ध कहानीकार)

आत्म-सस्कारयुक्त शिक्षा मे माता-पिता का स्थान भारत में अग्रिम रहा है। लेकिन आज के माता-पिता बच्चों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को भूल रहे है। अभिभावकों की उदासीनता ही आज सन्तान की अनुशासनहीनता का मूल कारण है।

आज की इन परिस्थितियो मे नैतिक-शिक्षा के लिए अणुव्रत का सदेश आत्मा का सदेश है।

—डॉ० दशरथ शर्मा

केवल स्वतन्त्र हो जाने से ही सारी समस्याओं का हल नहीं हो जाता। स्वतन्त्रता के बाद और ईमानदारी के साथ काम करने की आवश्यकता है। हमें प्रसन्नता है कि आचार्यश्री तुलसी व उनके शिष्य, देश के नैतिक धरातल को उठाने का सतत प्रयत्न कर रहे हैं। मुझे आशा है इस अणुव्रत-आन्दोलन से और देश के अन्य नैतिक आन्दोलनों से समाज व देश का काफी भला होगा।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
एम० पी०

अणुव्रत का कार्य महत्त्वपूर्ण कार्य है परन्तु मेरा विचार है कि नैतिकता जब तक आर्थिक आधार लेकर नही चलेगी, गरीब अपनी गरीबी के कारण अनैतिक बने रहेगे और अमीर अपनी अमीरी के कारण। फिर भी अणुव्रत कार्य की एक दिशा है और उसकी निष्ठा के लिए मुझे सम्मान है।

—राष्ट्रकवि हरिवंशराय बच्चन

वर्तमान की सबसे बडी कठिनाई यह है कि मनुष्य मानवता को भूलता जा रहा है, अपने आपको भूलता जा रहा है। चारों ओर अनैतिकता और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। संत-महात्माओं के देश की यह हालत हो, क्या यह शर्म की बात नही है? आचार्यश्री ने अणुव्रत के द्वारा सबका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है। हम सबका यह पावन कर्तव्य है कि अणुव्रत को अपने जीवन मे उतारे। उनके बताये हुए मार्ग पर चलें।

—डॉ० आत्माराम
अध्यक्ष, राष्ट्रीय विज्ञान एवं तकनीकी संस्थान

आचार्यश्री तुलसी एक सम्प्रदाय के भले हों, परन्तु आपके विचारो का कोई घेरा नही है। आचार्यश्री का सदेश है कि सब लोग चरित्रवान बने। 'अणुव्रत' के माध्यम से वे वही कार्य कर रहे है जिसकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

—अनन्त गोपाल शेवड़े

आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रारम्भ किया गया अणुव्रत आन्दोलन हमारे देश के नैतिक पुनरुज्जीवन की दिशा मे एक मंगलमय एवं आवश्यक चरण-निक्षेप है। भारत वर्ष के द्रष्टाओ ने सहस्रो वर्ष पूर्व मानव-समाज के उत्थान का, उसके नैतिक विकास का जो तत्त्व बुद्धिगम, हृदयंगम एवं आचरणंगम कर लिया था, उसी की आवृत्ति—मैं कहूंगा उस सनातन तत्त्व की अभिनव आवृत्ति—यह आन्दोलन है।

आचार्य तुलसी ने यह अणुव्रत आन्दोलन चलाकर हमारे समाज का पथ-प्रदर्शन किया है। मै उन्हें एक नैतिक ज्योति-शिखा मानता हू। मैं उनके सत्-संचरणशील, अथक, निरलस चरणो मे अपनी प्रणामाजलि अर्पित करता हूं।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
राष्ट्र के सुप्रसिद्ध कवि एवं चिन्तक

इस सदी मे हमारे देश और समाज का चरित्र-स्तर काफी नीचा हो गया है। इसकी ओर जिन देश और धर्म के नेताओं का ध्यान है, उनमे आचार्य तुलसी का भी ऊंचा स्थान है। वे एक सम्प्रदाय के आचार्य हैं, फिर अहिंसा-प्रेमी। दृष्टि-बिन्दु विशाल और सहानुभूति व्यापक है जो कि एक अहिंसा प्रेमी के लिए सर्वथा योग्य है। अणुव्रत आन्दोलन की स्थापना करके उन्होने यह दिखला दिया है कि वे केवल जैन समाज के ही नही, बल्कि सारे हिन्दू समाज और मानव-समाज के हितैषी है।

—हरिभाऊ उपाध्याय
गाधीवादी विचारक

जैन दर्शन ब्रह्माण्ड और ससार का निर्माण और नियमन करने वाली किसी ईश्वर की शक्ति में विश्वास नही करता। वह अजर-अमर आत्मा में विश्वास करता है। संयोगवश मैं आचार्यजी के दर्शन करके लौटा तो उनकी सौम्यता और सद्भावना के गहरे प्रभाव से सन्तोष अनुभव हुआ।

आचार्य तुलसी की प्रेरणा से अणुव्रत आन्दोलन यदि आध्यात्मिक उन्नति के लिए उद्बोधन करता हुआ भी जन-साधारण के पार्थिव कष्टों को दूर करने और उन्हे मनुष्य की तरह जीवित रह सकने मे भी योगभूत बनता है तो मै उसका स्वागत करता हूं।

—कामरेड यशपाल

भारतीय समाज को नारी का सब कुछ पसन्द है पर 'इंटेलेक्ट' पसन्द नहीं है। जहां-जहां वह अपने अनुभवो को रचनाओ मे लाने का प्रयत्न करती है, वहा-वहा समाज उसे कोरी भक्ति और अध्यात्म के साथ जोड़ देता है। महापुरुषो की दृष्टि मे स्त्री या पुरुष को लेकर कोई पूर्वाग्रह नही होता। वे हर वर्ग को विकास की नयी दिशा देने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। वर्तमान में यह दिशा-दर्शन आचार्य जी दे रहे हैं जिससे समाज का भला होगा।

—कवयित्री अमृता प्रीतम

एक समय था । जब मैं तेरापंथ का कट्टर आलोचक था, पर आचार्यश्री तुलसी के दूरदर्शी चिन्तन द्वारा सम्पादित व्यापक कार्यक्रमों ने मुझे तेरापंथ का पूरा समर्थक और प्रशंसक बना दिया। आचार्यश्री ने तेरापंथ संघ को युगीन मोड़ दिया है । तीर्थंकर के समवसरण मे जैसे आर्य-अनार्य सबको जाने का अधिकार है वैसे ही आचार्यश्री ने हर वर्ग और जाति के व्यक्ति को अपने पास आने का अवकाश दिया है। तेरापंथ की सबसे अधिक किसी विशेषता ने प्रभावित किया है तो वह है यहां की अप्रमत्तता, सतत जागरूकता और बेजोड अनुशासन ।

—दलसुख भाई मालवणिया

मानव जीवन के विकास के लिए आदर्शों के पथ पर चलना बहुत जरूरी है। आचार्यजी और उनके विचारो का आन्दोलन यही प्रेरणा देता है कि मनुष्य आदर्श जीवन जीए। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को महान् बनाने का कार्य कर रहे हैं। जीवन को महान् बनाने के लिए अणुव्रत एक सहारा है जिससे जीवन मे महानता की मंजिल तय की जा सकती है।

—प्रो० टी० आर० शेषाद्रि

जैसाकि मैं अणुव्रत-आन्दोलन के कार्य को देख पाया हूं, मैं कह सकता हूं कि राष्ट्र मे ऐसा कोई दूसरा कार्य नही है जो इससे अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हो। किसी भी राष्ट्र का उत्थान या पतन उसके चरित्र पर निर्भर करता है। यह आन्दोलन राष्ट्र के चरित्र का निर्माण करना चाहता है।

—के० ए० सुब्रह्मण्य अय्यर
उपकुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय

अणुव्रत आन्दोलन जैसे समाज-शुद्धिकारक आन्दोलन, जिनका लक्ष्य जन-जन के नैतिक स्तर को ऊचा उठाना और उनमे नैतिक मूल्यो के प्रति सजग भावना पैदा करना है, की आवश्यकता और महत्त्वशीलता को अत्यधिक आका जाना चाहिए, विशेषत: राष्ट्र की वर्तमान स्थिति मे। मुझे इसमें कोई संशय नही कि नैतिक जागृति का जो कार्य आन्दोलन की ओर से चला है, राष्ट्रीय विकास योजनाओ मे उसका अपना स्थान है और यह एक कमी को पूरा करता है।

—डॉ० सर रघुनाथ प्रांजप्ये
उपकुलपति, पूना विश्वविद्यालय

देश मे बहुत से व्यक्ति ऐसे होते हैं जो राष्ट्र के समक्ष उपस्थित समस्याओं को जान लेते हैं, किन्तु ऐसे व्यक्ति बहुत थोडे होते है, जो समस्याओ का सामना करते हैं और उनके समाधान के लिए प्रयत्न करते है । आचार्यश्री तुलसी एक ऐसे ही महापुरुष हैं उन्होंने अनुमान किया कि राष्ट्र की नैतिक भित्ति उनके साधारण विकास के लिए भी सुदृढ नही है । अतः उन्होने राष्ट्र मे चरित्र के निर्माण एवं विकास के आवश्यक कार्य मे अपना जीवन झोंककर महान् कार्य किया है ।

आपका जीवन भारत को महत्तर राष्ट्र बनाने मे सहायक होगा ।

—डॉ० बलभद्र प्रसाद

उपकुलति, इलाहबाद विश्वविद्यालय

आज पुराने विचार बदलते जा रहे हैं। धर्म के प्रति लोगों की श्रद्धा कम होती जा रही है। धर्म भावना की वजह से पहले अनैतिकताओं के प्रति भय रहता था पर अब वैसा नहीं है। इसी तरह बहुत से लोग जब कोई संकल्प करते है, तो उसका असर समष्टिगत वातावरण पर पड़ता है और लोगो मे बुराइयो से बचने की उनसे मुकाबला करने की शक्ति पैदा होती है। अणुव्रत आन्दोलन से ऐसी ही प्रेरणा देने वाली शक्ति का निर्माण हो रहा है। यह इसके सुन्दर भविष्य का सूचक है।

—वी० के० आर० वी० राव
उपकुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

विचारों के संप्रेषण के लिए साहित्य सबसे अच्छा माध्यम है। वह समाज का दर्पण भी है और समाज की वैचारिक समृद्धि का सूचक भी। भगवान महावीर ने प्राकृत भाषा मे धर्मोपदेश किया किन्तु आगमों के प्रचार-प्रसार के अभाव मे जैन-धर्म एक वैज्ञानिक धर्म होते हुए भी अपनी सीमा मे ही सिमटकर रह गया। जैन लोगो ने इस दिशा मे कुछ किया ही नही। आज प्रयास हो रहा है। हम लोग परमाराध्य आचार्यश्री तुलसी के अत्यन्त आभारी हैं, जिन्होंने आगम साहित्य के उद्धार का बीड़ा उठाया है।

—सत्यरंजन बनर्जी
कलकत्ता विश्वविद्यालय

अणुव्रत आन्दोलन की तह मे जायेंगे तो पायेंगे कि वह चरित्र-निर्माण के नियमो से कूट-कूटकर भरा है । जो नियम इसमे रखे गये हैं, वे किसी एक खास धर्म के नही है—वे सब धर्मों से सहमत हैं, धर्म के मौलिक उसूलो से भरे हुए हैं । आज जबकि आर्थिक विषमता के कारण देश की स्थिति अस्त-व्यस्त हो रही है, यह जरूरी है कि लोग इस कार्यक्रम मे जो अपरिग्रह के आधार पर चलता है, अपने को लगाएं। यह चरित्र-निर्माण का आन्दोलन शान्ति का आन्दोलन है । यह जन-जन मे शान्ति फैलाने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है ।

अणुव्रत आन्दोलन मे फिरकापरस्ती के लिए कोई स्थान नही है । यह सब कौमों और मजहबो के लिए है ।

—डॉ० सैफुद्दीन किचलू
उपाध्यक्ष, विश्वशान्ति परिषद

आज व्यक्ति-समाज और राष्ट्र के जीवन मे भ्रष्टाचार फैला हुआ है, जिसके विरुद्ध हमे नैतिक अभियान जारी रखना है। आज के संघर्षशील मानव में उत्पन्न आत्मद्रोही दुष्प्रवृत्तियो से हमे अहिंसक मोर्चा लेना है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि अणुव्रत आन्दोलन का दिव्य घोष जन-जन तक पहुचाया जाये।

—ब्रजकृष्ण चांदीवाला
सुप्रसिद्ध गाधीवादी विचारक

उर मे उल्लास अन्तर प्रकाश ले
कौन ? यहा आया,
मन मे उमंग ये नया रग
मेहमान नया आया।

यह गगन मगन मृदु मद पवन
मधुतान सुनाते है,
है कीर्ति धवल तव स्वागत मे
हम नयन बिछाते है।
अनुभूति जगाती जाग-जाग
भगवान यहा आया,
मेहमान यहा आया

लहरे मचले, सरिता बदले
सागर न बदलता है,
आदर्श धवल, सम्मान प्रबल
पर्वत न मचलता है।
शुभ कर्म अहिसा मृदुता का
वरदान नया लाया,
भगवान यहा आया।

—उमाशंकर पाण्डेय 'उमेश'

अणुव्रतों की व्यवस्था जिन आचार्यों ने की थी उनके लिए ये व्रत समाज के नैतिक संगठन और निराकुल सरक्षण के आधारभूत सिद्धान्त थे। ज्यों-ज्यों धर्म जीवन से विच्छिन्न होकर रूढ़ होता गया। अणुव्रत की महत्ता उसी अनुपात मे शास्त्रगत अधिक और जीवनगत कम होती गयी।

अणुव्रत चर्चा की सार्थकता आन्दोलन के रूप मे जो भी हो, आचार्यश्री तुलसी को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने अणुव्रतों का प्रतिपादन युग के संदर्भ मे किया और व्यापक स्तर पर समाज का ध्यान केन्द्रित किया।

—साहू शान्तिप्रसाद जैन

हम देश की इस विकट स्थिति को सुधारना चाहते हैं। इसके लिए हमारे सामने आचार्यश्री तुलसी के रूप मे गाधी जी तो है किन्तु जमुना लाल बजाज दिखाई नही दे रहे है। गाधी जी के दिमाग मे कोई कल्पना आती, उसकी रूपरेखा तैयार करना, क्रियान्विति की व्यवस्था करना, कार्यकर्त्ताओं को जुटाना, उन्हे सभालना—ये सब काम बजाज जी करते थे। आचार्यश्री के दिमाग मे कितनी कल्पनाए हैं, पर बजाज जैसे व्यक्तित्व के अभाव मे साकार नही हो पाती है। ऐसे व्यक्ति कल्पनाओं को साकार करने के लिए संकल्पबद्ध हो तो आचार्यश्री मानव-समाज के लिए बहुत बडा काम कर सकते है।

—ऋषभदास रांका

सामान्यतः आज का युग व्यक्ति-पूजा का नही रहा पर आदर्शों की पूजा के लिए भी हमें व्यक्ति को ही खोजना पड़ेगा। अहिंसा, सत्य व संयम की चर्चा के लिए अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी यथार्थ प्रतीक हैं। वे अणुव्रतों की शिक्षा देते है और महाव्रतो पर स्वय चलते हैं।

आचार्यश्री का व्यक्तित्व सर्वागीण है। वे स्वयं परिपूर्ण हैं और उनका दक्ष शिष्य समुदाय उनकी परिपूर्णता मे और चार-चाद लगा देता है। योग्य शिष्य गुरु की अपनी महान् उपलब्धि होते हैं।

अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से जो सेवा आचार्यजी व मुनिजनों द्वारा देश को मिल रही है, वह आज ही नहीं, युग-युग तक अभिवन्दनीय रहेगी।

—अक्षयकुमार जैन
साहित्य मनीषी

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन को एक नैतिक शक्ति का रूप प्रदान किया है। आचार्यश्री तुलसी के लिए व्यक्ति समाज की एक इकाई नही प्रत्युत समाज ही व्यक्तियो की समष्टि है। वे समाज से होकर व्यक्ति के पास नही पहुचते वरन् व्यक्ति से होकर समाज के निकट पहुचने का प्रयत्न करते हैं।

समाज तो एक कल्पना है जिसकी सत्यता व्यक्तियो की समष्टि पर निर्भर है। आचार्यश्री तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन व्यक्ति को लेकर चलता है। समाज तो उसका दूरगामी लक्ष्य है। वे व्यक्ति को सुधार कर समाज के सुधार को चरम परिणति के रूप मे प्राप्त करना चाहते है।

—प्रो० मूलचन्द सेठिया

अणुव्रत आन्दोलन सही अर्थ में मानव को मानव बनाने का आन्दोलन है। इसका दर्शन भारतीय संस्कृति के अनेक दर्शनो मे विशिष्ट स्थान रखता है। आचार्यश्री तुलसी ने समयानुसार देश को दिशा-दर्शन देकर दूरदर्शिता दिखाई है।

—सिद्धेश्वर प्रसाद

आज देश मे अनेक समस्याएं हैं। इसमे सबसे बडी समस्या है चरित्र की। इस समस्या के समाधान के लिए रास्ता निकालना चाहिए। आचार्य जी ने अणुव्रत के माध्यम से हम सब लोगो को एक रास्ता दिखाया है। सामाजिक जीवन पर अणुव्रत का निश्चित ही प्रभाव पड़ा है और भविष्य मे अधिक पड़ेगा।

—ए० के० सेन
एयर डायरेक्टर

नैतिकता को पढाया नही जाता है वह जीवन से उत्पन्न होती है। जब हमने गुणो को ही भुला दिया, गुणो की उपासना ही समाप्त हो गयी तब नैतिकता कहा रहेगी ? आज के युग की अपेक्षा है कि यदि हम नैतिक बनने के लिए संकल्पबद्ध हो जाएं तो हमे अपने मार्ग से कोई डिगा नही सकता। नैतिकता को जीवनगत करने के लिए अणुव्रतो का सहारा लेना होगा।

—सुरेश सेठ
प्रवक्ता

आजकल शिक्षालयो मे विभिन्न प्रकार की कलाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है किन्तु जीने की कला का वास्तविक प्रशिक्षण बहुत कम प्राप्त होता है। हम लोग जीने की कला को भूल गये। यदि प्रारम्भ से जीने की कला सिखलाई जाती तो कदापि देश मे अच्छे नागरिको का अभाव नही होता। छात्रों का सुधार देश का मौलिक सुधार है। यह कार्य आचार्यजी अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से कर रहे है। हम छात्रो को जीने की कला का उद्‌बोध दे रहे है।

—आचार्य प्रवीण चन्द जैन
शिक्षा शास्त्री

अब हमारा देश स्वतन्त्र है और हमे केवल भौतिक उन्नति से ही सन्तोष न कर लेना होगा, बल्कि यह भी विचार करना होगा कि हमारा नैतिक स्तर भी ऊचा उठ रहा है या नही। यदि नही तो उस पर विचार करना होगा और राष्ट्र की भौतिक उन्नति के साथ-साथ नैतिक उन्नति के कार्य को भी प्राथमिकता देनी होगी।

नैतिकता उन्नति का सबसे बडा सूत्र है, अणुव्रतो का स्वीकरण। आचार्यश्री तुलसी ने नैतिक उत्क्रान्ति का वातावरण बनाया है। सामाजिक और वैयक्तिक दोनों स्तर पर इस आन्दोलन ने जन-मानस पर अमिट छाप छोड़ी है।

—ललन प्रसाद व्यास

अब तक मैं निराश था कि भारत जैसे देश मे भी अहिंसा का प्रसार करने वाला कोई आन्दोलन नही है। किन्तु आपसे मिलने के बाद मेरी निराशा टूट चुकी, मुझे लगता है कि यहा कुछ काम हो सकता है। अणुव्रत का कार्यक्रम जबसे सामने आया अहिसक क्राति चाहने वाले लोगो को कुछ आशा बंधी है।

—डॉ० जयदिन शा
(अमेरिका)

आचार्यश्री तुलसी द्वारा चलाए हुए अणुव्रत आन्दोलन ने भारत के विचारकों पर काफी प्रभाव डाला है। वास्तव में यह आन्दोलन अपने ढंग का अनूठा है। इसकी पृष्ठभूमि मे चरित्र-गठन आध्यात्मिक उन्नति, आत्म-निरीक्षण, आत्म-सुधार, सामाजिक सुधार जैसी अमूल्य भावनाएं होने से सहसा जनता पर प्रभाव पडता है।

आचार्यश्री तुलसी के हम आभारी हैं कि इस जनोपयोगी आन्दोलन को उन्होंने जन्म दिया और वे मानव-उत्थान के लिए सतत अथक परिश्रम कर रहे है।

—रघुनाथ विनायक धुलेकर

आचार्यश्री तुलसी मानवता की उन विभूतियो मे से है जो सक्रान्ति और दिग्भ्रम की बेला मे दिग्-निर्देश किया करते है। अणुव्रत आन्दोलन भारतीय साधना और सस्कृति के मूल तत्त्वो का युगानुरूप समुच्चय है।

अणु युग मे अणुव्रत का नारा सचमुच चौकाने वाला है। हिसा, द्वेष, घृणा और रक्तपात के कीचड मे अणुव्रत एक पकज ही है। हमारी सस्कृति ने सदा ही भौतिक के ऊपर आधिभौतिक की विजय मे आस्था रखी है।

अणुबम विनाश का अस्त्र है, अणुव्रत जीवन का मगलमय दर्शन।

अणुबम विष है, अणुव्रत अमृत।

अणुबम प्रलय का वाहक है, अणुव्रत नव-जीवन का गायक।

—प्रो० शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

आज के इस वैज्ञानिक युग मे विज्ञान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच रहा है। ऐसे युग में यदि मानव ने अपनी मानवता छोड दी, स्पर्द्धा, ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थ के भावो से आक्रान्त होकर उसने युद्ध की विभीषिकाओ की आग सुलगा दी, तो कहा रहेगी मानवता और कहा रहेंगे सभ्यता के आश्चर्यजनक उपकरण ?

आज मानवता विकट स्थिति मे है। उसे आश्रय-स्थल चाहिए। सूर्य के प्रकाश की भाति स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि विज्ञान भले ही अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच जाए, मानवता की रक्षा, मानवता के उदार नियमों द्वारा ही हो सकती है। ऐसे नियमो का सकलन है—अणुव्रत। इसके द्वारा ही मानवता की रक्षा की जा सकती है।

—डॉ० कन्हैयालाल सहल

आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित नैतिक मूल्यो की स्थापना का आन्दोलन समय की आवश्यकता का उत्तर है। आज नही कहा जा सकता कि भारतीय जन-मानस इस मध्य मार्ग को किस सीमा तक ग्रहण करेगा, लेकिन अणुव्रत के अतिरिक्त नैतिकता की स्थापना के लिए कोई अन्य कार्यक्रम हो नही सकता और आज के भारतीय जन-मानस के लिए यम और नियम की ओर अग्रसर करने वाला यही एक कार्यक्रम सम्पूर्ण धार्मिक, सम्पूर्ण सामाजिक, सम्पूर्ण सास्कृतिक और सम्पूर्ण राजनैतिक कार्यक्रम है। अणुव्रत महाभारत के प्रज्ञावाद का ही दूसरा रूप है।

—सुमनेश जोशी

आचार्यश्री तुलसी की उदात्त भावनाओ से हम परिचित हैं। वे अणुव्रतों के द्वारा भ्रष्टाचार दूर करने का प्रयास कर रहे हैं। आज ऐसे प्रयास की बड़ी अपेक्षा है। आचार्यश्री न मंत्री पद चाहते हैं न जनता से वोट मागते हैं। सब लोगो की खोट लेकर वे ससार के चारित्रिक स्तर को उन्नत करना चाहते है।

—डॉ० शिवमंगलसिंह 'सुमन'
कवि

फैला जब चारो ओर तिमिर का अन्धजाल,
अन्याय-अनय-हिंसा का नित दशन कराल,
शोषण-मर्दन की पीड़ा से जब त्रस्त देश,
तुलसी आया ले 'चरैवेति' का नव सन्देश।

तुलसी का 'अणुव्रत' जागृति का अभिनव प्रतीक,
अध्यात्मवाद का परिपोषक, संदर्भ-लीक,
दिग्भ्रान्तो का वह करता है पथ-निर्देशन,
सभ्यता-संकृति के तत्त्वो का अनुशीलन।

व्रत करते हैं कुछ लोग, स्वार्थ की सिद्धि-हेतु,
व्रत करते है लोग कुछ, बनाने स्वर्ग सेतु,
लेकिन यह 'अणुव्रत' कैसा जिसमे नही स्वार्थ,
निष्काम कर्म यह है नैतिकता प्रचारार्थ।

—कीर्तिनारायण मिश्र,
एम० ए०

अणुव्रत विस्फोटों के इस युग मे,
अणुव्रत ही संबल मानव का,
व्रत निष्ठा के बिना विफल है,
अनियंत्रित भुजबल मानव का।

संघबद्ध स्वार्थों के तम मे,
अणुव्रत ही प्रत्यूष किरण-कण,
महाज्योति उतरेगी भू पर,
कभी अणुव्रती के ही कारण।

अणुव्रत के आचार्यप्रवर,
जो शील, विनय, सयम के दानी,
व्यक्ति-व्यक्ति का शुभ आचरण,
बन जाती है जिनकी वाणी।

—नरेन्द्र शर्मा

अशांति के सागर मे गोते खाती युवा पीढी को आचार्यश्री ही शांति का मार्ग दिखा सकते है। क्रांति की बात करनी आसान है पर वह बहुत मुश्किल है। क्या कुछ झाडियो मे आग लगने से दावाग्नि भभक सकती है। कभी नही। वैसे ही समग्र क्रांति कभी एक-दो व्यक्तियो से नही होती। उसके लिए समग्रता से प्रयत्न करने की अपेक्षा है। आचार्यश्री तुलसी जैसे तपस्वी महामानव ही ऐसा वातावरण निर्मित कर सकते है।

—राममनोहर त्रिपाठी
(साहित्यकार, बम्बई)

तुम ऐसे एक विसर्जन, जो सृजन लिये चलते हो!

कब घन अपनी बूंदो से, अपनी ही तृषा बुझाता?
कब तरु अपने सुमनो से अपना शृंगार सजाता।
तुम ऐसे एक समर्पण जो ग्रहण लिये चलते हो!

देते हो दान विभा का, लेते हो जग की ज्वाला,
तुम सुधा बाट कर शिव सम, पीते हो विष का प्याला।
तुम ऐसे एक निरंजन जो भुवन लिये चलते हो!

तुम महामुक्ति के पंथी बन्धन की महत्ता कहते।
तुम आत्म-रूप अपने मे पर देह रूप मे रहते।
तुम ऐसे एक विचक्षण जो द्वैत बने दलते हो?

—कन्हैयालाल सेठिया

आचार्यश्री तुलसी ने धार्मिक इतिहास की परम्पराओ पर ही बल नही दिया बल्कि व्यक्ति और समय की आवश्यकताओ को समझ उसके अनुरूप ही अपने उपदेशो को मोड़ा है।

इन्होने भगवान महावीर की अहिंसा-नीति का हर व्यक्ति में समन्वय करते हुए नये दृष्टिकोण से एक नयी पृष्ठभूमि तैयार की है।

मानव को देव नही, मानव बनाने का इनका गम्भीर प्रयत्न बिना किसी फल और कीर्ति की आकाक्षा के निरन्तर चलता है।

—श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया

अणुव्रत के आचार्यप्रवर श्री तुलसी
के प्रति अर्पित है
मेरी लघु वचना प्रणति
नमस्कृति

—सियाराम शरण

जिस समय नैतिक समाज संरचना के पुनीत मिशन को लेकर अणुव्रत आन्दोलन का जन्म हुआ। वह समय भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति का ऐतिहासिक अवसर था। इतिहास की उन घड़ियों मे अणुव्रत आन्दोलन ने जो कुछ किया वह अभूतपूर्व है। साम्प्रदायिक उन्माद एवं भ्रष्टाचार के उस वातावरण मे अणुव्रत ने राष्ट्रीय चरित्र जागरण का जो माहौल पैदा किया, वह अनुकरणीय है।

—पारस जैन
(हैदराबाद)

गुरुता पाकर तुलसी न लसे
गुरुता लसी पा तुलसी की कृपा

—गोपाल प्रसाद व्यास

विश्व के इतिहास मे समय-समय पर अनेक समाज-सुधारक होते रहे है। जिनके प्रभाव से समाज की गति एक सीधे रास्ते पर बनी रही है। देश की उन्नति के लिए सच्चरित्र, पर-हित-रत, कर्तव्य-परायण, सदाचारी, नेता, व्यापारी, शिक्षक आदि देश के विकास की बागडोर अपने हाथ मे ले तो देश के नैतिक उत्थान मे चार-चाद लग सकते है। इन सभी वर्गों को सजग करने के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन कर देश की जनता को सदाचार और चरित्रवान बनने का सन्देश दे दिया है। इनका यह आन्दोलन अपने ढग का निराला है। हमे इसके सहयोग मे हाथ बढाना चाहिए।

—डॉ० विश्नेश्वर प्रसाद
अध्यक्ष इतिहास विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

'अणुव्रत' बहुचर्चित विषय है। यह जीवन-विकास का मध्यम मार्ग है। अणुव्रत अव्यवहार्य को व्यवहार्य बनाता है। असम्भव को सम्भव करता है। अपूर्णताओ को सकेतित करता है और पूर्णता की ओर अग्रसर होने में साधन बनता है। मनुष्य अपनी सारी प्रवृत्तियों मे ऐसा मध्यम मार्ग अपना कर समाज एवं राष्ट्र को उन्नत बना सकता है। वह अनावश्यक संघर्षों से मुक्त रह सकता है और सुखी समाज रचना मे प्रवृत्त हो सकता है। अणुव्रत सामूहिक जीवन विकास का एक मंगल मार्ग है। वह एक शब्द या कल्पना मात्र नहीं है। बल्कि भाग और त्याग के सच्चे समन्वय का दिग्दर्शक एवं राजपथ है।

—डॉ० नथमल टांटिया
शोध विभागाध्यक्ष,
जैन विश्व भारती

अमल अकुल नव ज्योति विभाकर,
सार्वभौम हित ज्योति दिवाकर,
जन जन के मन के दूषित वर,
बन्धन सकल अबन्धनमय कर।

'अणुव्रत' सत्य अहिंसात्मक बल,
पाकर हो जन-जन-मन अविचल,
पंकिल जल रत ज्यो नव उप्पल,
किंजल कीरत त्यो जन-हृत्थल।

—ओम प्रकाश द्रोण

पिछले अरबो वर्षों मे विकासवाद के माध्यम से जो उत्क्रान्ति हुई है उसका परिणाम है मानव मस्तिष्क का उद्भव। किन्तु आज यदि अहिंसा का विकास नही किया गया तो सम्भवत: आगे आने वाले युग मे हिंसा इतनी अधिक विकसित हो जाएगी कि उसका परिणाम समग्र मानव जाति का विनाश ही होगा। इस विनाश से बचने के लिए हमे अहिंसक शक्ति का विकास करना होगा। इस विकास के लिए हमारे सामने एक मार्ग है अणुव्रत का। इसी के सहारे हिंसक शक्तियो से बचा जा सकता है।

—डॉ० डी० एस० कोठारी
अध्यक्ष, भारतीय विज्ञान अकादमी

अणुव्रत आचार्यश्री की अनूठी सूझ-बूझ वाला मानवीय आन्दोलन है। यह धर्म, सम्प्रदाय तथा वर्ग विशेष की सीमाओं से मुक्त होकर छोटे-छोटे नियमों के माध्यम से आत्म-विकास की दिशा प्रदान करता है।

—जगन्नाथसिंह मेहता

आज देश मे गरीबी और भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत के माध्यम से इस दिशा में महान् काम कर रहे हैं। हमारा पहला कर्तव्य है कि आचार्यश्री हमे जो मार्ग बताएं, हम उस पर दृढता से चलने की कोशिश करें।

—श्रीमती कोकिला व्यास

पिछले सौ साल में जैन धर्म में तीस प्रमुख घनटाएं हुई जिनमें से एक है तेरापंथ का कायाकल्प। इसे मैं एक क्रांति मानता हूं। इसकी विशेषता यह है कि आचार्यश्री तुलसी ने जन-समूह को साथ लेकर यह क्रान्ति की है और क्रान्ति के बाद भी उनके अनुयायियो की संख्या बढ़ती गई है। क्रान्ति मे भी लोग पीछे छूट जाते है पर आचार्यश्री समाज को साथ लेकर चलते हैं।

—डॉ० कुमार पाल देसाई

आपने एक क्रान्तिकारी सूत्र दिया, वह है—प्रेक्षाध्यान। उसकी आज संसार को अपेक्षा है। आज आदमी इतनी सुषुप्ति मे है कि झक मारने पर भी जाग्रत नही होता। जब तक मनुष्य जागेगा नही, दीप जलाएगा नही तो अन्धकार दूर कैसे होगा? हम चाहते हैं कि आपके प्रेक्षाध्यान से हमारे भीतर एक ऐसा दीपक जल जाए, तो जन्म-जन्म के तमस को धोकर हमे आलोक की यात्रा से अतियात्रित कर दे।

—चीनू भाई नायक
शिक्षा शास्त्री

सामाजिक मूल्य-परिवर्तन की दशा में अणुव्रत की जो उपयोगिता है वह देश के निर्माण मे चार-चाद लगा सकता है। जब तक सामाजिक मूल्यों का परिवर्तन नही होगा केवल कानून से किसी का मानस नही बदल सकता है।

—**पी० एन० भगवती**
न्यायाधीश, हाई कोर्ट

धर्म के आदर्श और सिद्धान्तों को जीवन मे नही उतारा जायेगा तब तक धर्म तेजस्वी नही बन पाएगा। आचार्यजी ने इसी बात को ध्यान में रखकर अणुव्रत का काम शुरू किया है। देश मे बढ़ती हुई अनैतिकता की रोकथाम के लिए अणुव्रत कार्यकारी सिद्ध हो सकता है।

—हरवंश लाल
न्यायाधीश

अणुव्रत-आन्दोलन के बारे मे मेरी अनुरक्ति है। यह तो मनुष्य का अपनी खुराक से भी आवश्यक कार्य है। विद्यार्थियो मे जो काम हुआ और हो रहा है, वह और भी मौलिक है। यह देश की भावी पीढी है, उन पर ही सारे देश का दायित्व आने वाला है। उनमे यदि अनुशासनहीनता और अन्य बुराइया बढती रही तो यह सब देश के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

बुराइयो का मिटना तो हृदय-परिवर्तन से ही हो सकता है। अणुव्रत आन्दोलन इसके लिए सतत प्रयत्नशील है।

—एस० आर० दास
न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय

अणुव्रत आन्दोलन का उद्देश्य गृहस्थों का नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान करना है और इसके लिए वह उन्हें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य की एक निर्धारित सीमा तक प्रतिज्ञाएं लेने की प्रेरणा देता है। इसका लक्ष्य है कि मनुष्य अपनी प्रकृति का नैतिक रूपान्तर करे। इस आन्दोलन के सूत्रधार आचार्यश्री तुलसी स्वयं एक महाव्रती हैं इसीलिए वे साधारण व्यक्तियों से अणुव्रत की प्रतिज्ञाएं लेने का अनुरोध करते हैं।

—सुरजीतसिंह लाहिड़ी
मुख्य न्यायाधीश, कलकत्ता उच्च न्यायालय

जब मानव-सभ्यता का उदय हो रहा था, जब दुनिया अज्ञान और अन्ध--विश्वास के दलदल मे फंसी हुई थी, तब दुनिया के इस प्राचीन देश ने संसार को सद्भावना और बन्धुता का सन्देश दिया। काल-क्रम के साथ मानव-सभ्यता का विकास हुआ पर जीवन के शाश्वत मूल्य भूलते चले गये। इसका परिणाम आज इस युग मे हम देख रहे है।

इस युग मे फिर बन्धुत्व भाव जगे, सदाचारी और संयमित जीवन जीने की भावना उत्पन्न हो। इस लक्ष्य को ध्यान मे रखकर आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रतो का नवीन शैली मे प्रतिपादन किया। अणुव्रत आन्दोलन हमको आत्म-चिन्तन और आत्म-निरीक्षण का अपूर्व अवसर देता है। इस आन्दोलन का लक्ष्य है—विश्व-बंधुत्व की भावना जगे, मानव अपने नैतिक कर्त्तव्यो के प्रति जागरूक रहे।

—सुधि रंजनदास
न्यायमूर्ति, सर्वोच्च न्यायालय

परमात्मा को जानने के लिए मनुष्य को विशेष योग्यता प्राप्त हुई है। योग्यता पाने के लिए अणुव्रत का अभ्यास आवश्यक है। 'अणुव्रत' छोटा-सा संकल्प है। इसी संकल्प से जीवन मे समस्याओ से मुक्त बनने की शक्ति प्राप्त होती है।

—के० एस० वेंकटारमन्
न्यायाधीश

आचार्यश्री तुलसीजी शांति और अहिंसा का पैगाम लेकर आए है। शांति के संदेशवाहक ऐसे महान् संत इस धरती पर शताब्दियों मे कभी-कभी ही जन्म लेते हैं। मैं ऐसा अनुभव करता हूं कि भौतिकता से मूर्च्छित होती जा रही जनता को संजीवनी पिलाने के लिए आचार्यश्री हमारे देश में परिव्रजन कर रहे हैं। वायुयान और जेट विमान के युग मे आप पदयात्रा करते हुए जनता का पथ-दर्शन कर रहे हैं।

—एन० एस० डंटवालियां
न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय

अणुव्रत आन्दोलन का जो कि वर्तमान में न केवल भारतवर्ष के लिए अपितु समग्र विश्व के लिए एक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है, इसका आरम्भ आपके आचार्य काल की विशिष्ट देन है, इस आन्दोलन का उद्देश्य है—सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्यों के प्रति मनुष्य की श्रद्धा को उद्बुद्ध करना तथा इन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करना।

—भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा
मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय

कानून व्यक्ति को खोलता नही, बाधता है। हृदय-परिवर्तन व्यक्ति को बाधता नही, खोलता है। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा देश की जनता को हृदय-परिवर्तन का संदेश दिया। व्यक्ति को यदि कानून के कटघरे से मुक्त होना है तो हृदय-परिवर्तन का ही सहारा लेना होगा।

—**डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी**
विधिवेत्ता

हृदय को प्रभावित करने वाले अनेक आयोजन व अभियान चलते हैं। मैं मानता हूं कि जिस तरह अणुव्रत आन्दोलन ने हृदय को प्रभावित किया है, शायद ही दुनिया मे ऐसा कही आन्दोलन चले। यह अपने ढग का अनूठा हृदय-परिवर्तन का आन्दोलन है।

—विधाधर शास्त्री

अणुव्रत का लक्ष्य बहुत ऊंचा है। मैं मानता हूं, यह भारतीय संस्कृति में नैतिक जागरण का संदेश प्रदान करने वाला महत्त्वपूर्ण आन्दोलन है। इसका दर्शन अनेक भाषाओं के माध्यम से देश-विदेश मे पहुचाना चाहिए जिससे अधिक से अधिक लोग इसे समझे और अपनाएं।

—**देवी लाल सामर**

अध्यक्ष, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर

मै तो आपके शरणागत हूं। यद्यपि चमत्कारो मे मेरा विश्वास नही है पर आपकी शक्ति ने मेरे जीवन को ऐसे चमत्कारो से भर दिया, जिसकी मैं कल्पना भी नही कर सकता। जो त्याग और वात्सल्य मैंने आपके जीवन में देखा, वह मुझे कही भी नही मिला। मुझे तो ऐसा लगता है कि सारे भारत मे ऐसे धर्माचार्य दूसरे नही हैं।

मै आचार्यश्री को आयुर्वेद प्रवर्तक के रूप मे देख रहा हू। गुजरात के वैद्य सैनिक के रूप मे हम आपके साथ है। बस! हमारी तो एक ही आकाक्षा है कि आपकी मंगलमयी आशीष हमारा मार्ग-दर्शन करती रहे।

—गोविन्द प्रसादजी वैद्य
आयुर्वेद भिषक

आचार्यजी ने भारत की आजादी के बाद अणुव्रत आन्दोलन चलाया। जहां एक ओर उद्योग-धन्धे बढ रहे थे वहा नैतिक जागरण की कमी महसूस हो रही है। इसी कमी ने एक आन्दोलन का रूप लिया और आज यह सारे देश मे ख्यातिप्राप्त आन्दोलन हो गया। इस आन्दोलन के माध्यम से जनता को सही जीवन जीने की प्रेरणा दे रहे है। यह देश की और मानव-जाति की बहुत बड़ी सेवा है। •

—कृष्ण कुमार बिड़ला
उद्योगपति

असन्तुलित जीवन मे सन्तुलन लाने के लिए आज आवश्यकता इस बात की है कि हम नैतिक उत्थान की ओर सतत क्रियाशील रहे। नैतिकता की उपलब्धि के लिए हमे अपने दैनिक जीवन की गतिविधि का संयम करना होगा। हमे उठते-बैठते अपने प्रत्येक कार्यकलापों पर कडी आख रखनी होगी। इस प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए अणुव्रत आन्दोलन एक अन्यतम उपाय है। आचार्यश्री तुलसी ने सनातन सिद्धान्तो को जिस प्रकार का क्रियात्मक रूप दिया है, भारतवर्ष उससे प्रभावित है। अणुव्रत आन्दोलन एक विकासमान नैतिक क्रान्ति का सन्देश-वाहक होने के नाते जीवन के क्रमिक उत्थान मे विश्वास करता है।

—पद्मपत सिंहानिया

देश मे आजादी के बाद उद्योगो का अच्छा विकास हुआ। मैं सोचता हूं भौतिक साधनो के विकास के साथ व्यक्ति मे ईमानदारी का विकास हो, चरित्र और कर्तव्य का विकास हो मगर हो कैसे ? जब मै आचार्यश्री से मिला तो लगा कि आपने व्यक्ति मे ईमानदारी, चरित्र और सद्आचरण के विकास के लिए अणुव्रत आन्दोलन चला रखा है। आपका यह आन्दोलन मानव-निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

—रामनाथ गोयनका
उद्योगपति

आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य मे स्थापित अणुव्रत आन्दोलन के इस पवित्र आयोजन के सम्वाद को पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। इस आन्दोलन ने गत वर्षों में जो प्रगति की है, वह आशातीत एव सन्तोषप्रद है। इस भीषण सघर्ष के युग में जनता को अध्यात्म-मार्ग प्रदर्शन की आवश्यकता है। भौतिक जागृति से अधिक महत्त्वपूर्ण हमारी आध्यात्मिक जागृति है, जिसके अभाव मे जीवन सुखी नहीं बन सकता। संसार का वास्तविक कल्याण तभी हो सकता है जबकि जनसाधारण के चरित्र की ओर ध्यान दिया जाए। आचार्यश्री तुलसी ने इस दिशा मे चारित्रिक जागृति का एक ठोस कदम रखा है। सबसे बड़ी विशेषता इस आन्दोलन की यह है कि बिना किसी जाति, सम्प्रदाय और वर्गभेद के जनता इसमे भाग लेकर लाभान्वित हो सकती है।

मेरी हार्दिक कामना है कि नैतिक निर्माणकारी व जन-जीवन-शुद्धि का यह उपक्रम पूर्ण सफलता प्राप्त करे एव अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की दिशा मे एक महत्त्वपूर्ण प्रयास सिद्ध हो।

—सवाई मानसिंह
महाराजा, जयपुर

आचार्यश्री तुलसी की सभा में किसी प्रकार का भेदभाव नही है। हरिजन-महाजन सभी वर्ग के लोग आपके प्रवचनो से लाभान्वित हो रहे हैं। यह प्रसन्नता की बात है आज का सामाजिक वातावरण बहुत दूषित बना हुआ है। ऐसे समय मे आप जैसे सन्तों की बहुत आवश्यकता है जो सही पथ-दर्शन करा सके।

—राजसिंह
महाराजा जोधपुर

अणुव्रत आन्दोलन कोई राजनीतिक यज्ञ नही है। यह तो मानव मात्र की आध्यात्मिक उन्नति का प्रयास है। इसका उद्देश्य है कि जीवन पवित्र बने। दैनिक जीवन मे सच्चाई व प्रामाणिकता आए। थोड़े मे कहा जाए, तो अणुव्रत आन्दोलन चरित्र का आन्दोलन है। देश में सर्वत्र भ्रष्टाचार, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि अनेक विषैले कीटाणु हमारे समाज को नष्ट करने मे व्यस्त हैं। ऐसी दशा मे उसका उद्धार केवल अणुव्रत जैसे आन्दोलनों के द्वारा ही हो सकता है।

—करणी सिह
महाराजा, बीकानेर

आचार्यश्री देश की एक महान् हस्ती हैं। आपका चिन्तन देश के नैतिक व चरित्र उत्थान मे ही लगा रहता है। देश की सच्ची शान ही नैतिकता और चरित्र है। नैतिकता और चारित्रिकता ही देश की अमूल्य निधि है। इसे हमें सुरक्षित रखना है।

—महाराणा भगवत सिह

अणुव्रत-आन्दोलन एक सार्वजनिक प्लेटफार्म है। यह दुनिया के हर मजहब का निचोड है। सभी कौम व जाति के लोग इससे फायदा उठा सकते हैं। यह वह मजमा है, जिससे किसी को मुखालफत नही हो सकती। आजादी मिलने के बाद आज हमारी अहिंसा सो रही है, हमारे दिमाग सो रहे हैं। यह आन्दोलन हमारी सोई हुई अहिंसा और सोये दिमागों को जगा देना चाहता है।

—श्रीमती बेगम अलीजहीर

वर्तमान युग में सदाचार और सयम का प्रचार बहुत आवश्यक है । भारतीय संस्कृति के पुराने ढंग के अनुसार यह काम ऋषि-मुनियो का, स्वामी-संन्यासियो का और भिक्षु-यतियों का गिना जाता था । कालातर से और वर्तमान युग के विश्व-व्यापी समस्याओं की दृष्टि से प्रचार करने वालों की संख्या सीमित रखना भारत के हित मे न था । परन्तु त्रुटि की पूर्ति करने वाले लोग स्वय उच्चकोटि के हों तो देश का कल्याण हो सकता है ।

अणुव्रत आन्दोलन का काम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है । आचार्यश्री सचमुच मे ही ससार के लिए एक महा प्रदीप का कार्य कर रहे है । मैं तदर्थ सम्पूर्ण यश की कामना करता हू ।

—श्रीधर वासुदेव सोहनी

यह जानकर अत्यधिक उल्लास है कि अभी तक अणुव्रत की अखंड ज्योति निरन्तर जलाए चल रहे है। इस अणुबम के युग में अणुव्रत की आवश्यकता कम महत्त्वपूर्ण और महिमामय नही है। विश्व की विभीषिका आपके इस अभियान से आतंकित होगी, ऐसा मेरा सहज विश्वास है।

—बृजकिशोर नारायण

अणुव्रत की कल्पना ही नैतिक शिक्षा की कल्पना है। नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के बिना हमारा देश प्रगति नही कर सकता। नैतिक शिक्षा के लिए शिक्षक की नही, गुरु की आवश्यकता होती है। एक दृष्टि से अपना गुरु स्वयं की आत्मा होती है, दूसरा कोई नही किन्तु वह गुरु तभी हो सकती है जब उसमें उदात्तता हो। मूर्च्छित या मृत आत्मा गुरु नही हो सकती। उसे जागृत करने या संजीवन देने का काम अणुव्रत कर रहा है।

—एल० ओ० जोशी
शिक्षा शास्त्री

भारतीय संस्कृति एक शास्वत जीवन-शक्ति है। अत्यन्त प्राचीन काल से आधुनिक युग तक महान आत्माओं के जीवन और उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा की लहरे प्रवाहित हुई हैं। इन सन्तो ने अपनी गतिशील आध्यात्मिकता, गम्भीर अनुभवों और अपने सेवा और त्यागमय जीवन के द्वारा हमारी सभ्यता और संस्कृति के सारभूत तत्त्व को जीवित रखा है। आचार्यश्री तुलसी एक ऐसे ही सन्त है।

अत: आचार्यश्री तुलसी ने भारत माता की सच्ची मुक्ति के लिए अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात करके बड़ा महत्त्वपूर्ण काम किया है। सर्वोपरि आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्तियो और सारे समाज के जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो की स्थापना हो।

—डॉ० मोतीदास
भारत संस्कृति परिषद्, कलकत्ता

आचार्य तुलसी के लिए मैं मसीहा शब्द का प्रयोग करता हू । मसीहा उसे कहा जाता है—जो अच्छे कार्य के लिए, मानवता के लिए अपने आपको समर्पित कर दे। आचार्य तुलसी को मैं मानवता के प्रति समर्पित व्यक्तित्व मानता हू ।

—ओरावी गोविन्द पादरी
नवजीवन चर्च, जोधपुर

आचार्यश्री तुलसी ऐसे परमात्मा हैं जो परमात्मा का रास्ता बताने के लिए इस धरती पर आये हैं। मुझे ऐसा अनुभव होता है कि आपके दर्शन, आत्मा के दर्शन हैं, परमात्मा के दर्शन है। ये दर्शन हम जैसे मोह-माया मे उलझे लोगो के लिए दुर्लभ हैं जितनी होम्योपैथिक सूक्ष्म सिद्धान्त पर आधारित चिकित्सा पद्धति है, वैसे ही प्रेक्षाध्यान एक सूक्ष्म पद्धति है। सूक्ष्मता में मेरा विश्वास है। मैं यह मानता हूं कि प्रेक्षाध्यान हमे आत्मा के सूक्ष्म रहस्यो तक पहुंचा सकता है।

—डॉ० बी० के० गांगुली
होम्यियो विशेषज्ञ, कलकत्ता

आचार्यश्री के अणुव्रत के माध्यम से हिंसा और अनैतिकता से त्राण पाने की बात जन-जन तक पहुंच गयी है। बौद्धिक लोगों के दिमाग मे प्रतिक्रिया भी हुई है। हम चाहते है धर्म और अणुव्रत के माध्यम से आशा और आस्था के भाव पैदा किये जाएं।

—जी० एस० व्यास
आकाशवाणी डायरेक्टर

भारत एक विशाल देश है। इस देश मे अनेक सम्प्रदाय हैं, आचार्य हैं, साधु हैं किन्तु आचार्यश्री तुलसी जैसा आकर्षण कही नही है। इसका कारण यह है कि आचार्यश्री तुलसी साम्प्रदायिक भावनाओ से बहुत ऊपर उठ गये है। आपका विश्वास मानवता मे है। आप सभी जाति और वर्ग के लोगों को नैतिक दृष्टि से उन्नत देखना चाहते हैं। आप सबके कल्याण की बात करते है इसीलिए सभी वर्ग के लोग आपके प्रति श्रद्धा रखते है।

—जयन्ती भाई शास्त्री
ज्योतिषाचार्य

पत्रकार–सम्पादक

देश का हिंसक वातावरण देशवासियो के मन मे भय पैदा कर रहा है। ऐसी भयानक स्थिति चाहे पंजाब की हो या असम की। इसमे परिवर्तन मात्र हृदय-परिवर्तन से ही संभव है और यह कार्य आचार्यश्री तुलसी जैसे महान् व्यक्तित्व ही कर सकते हैं।

—कुलदीप नैयर
पत्रकार

आज देश को भौतिक निर्माण के साथ-साथ चरित्र-निर्माण की अत्यधिक आवश्यकता है। चरित्र के परिप्रेक्ष्य में देश का भविष्य अन्धकारमय है। इस अन्धकार को मिटाने के लिए अणुव्रत आन्दोलन एक ज्योति के समान है। आचार्यजी ने देश के नागरिको को चरित्र-निर्माण की शिक्षा दी, प्रयोग बतलाये, जरूरत है कि उन प्रयोगों को आत्मसात करें।

—प्रभाष जोशी
सम्पादक, जनसत्ता

वर्तमान पीढ़ी को पुराना सत्य तभी स्वीकार होगा जब उसे वर्तमान का सत्य बनाकर दिया जाए। आज चिन्तन, मंथन और दृष्टि राजनीति में बंद हो गई। राजनीति के नेतृत्व में हमें निराशा, विघटन और अंधकार प्राप्त हुआ है। इसे मिटाने के लिए धार्मिकों और राजनेताओं को अपनी इच्छा पर नियंत्रण करना होगा। यह दृष्टि हमें आचार्यश्री और अणुव्रत से प्राप्त हो रही है।

—डॉ० धर्मवीर भारती
संपादक, धर्मयुग

आज विश्व की महाशक्तियो मे शस्त्रों की होड लगी हुई है। संसार विनाश के कगार पर खड़ा है। अगर उसे कोई बचा सकता है तो वह अणुव्रत ही बचा सकता है। कुछ बडे देशो के द्वारा इतने अधिक शस्त्रों का निर्माण हो चुका है कि वे एक-दो बार नही बल्कि तीन-तीन बार संसार का विनाश कर सकते है। सारा संसार भयभीत है, और मनुष्य की बडी दयनीय स्थिति बन गई है। विनाश की काली छाया से बचाने के लिए ही आचार्यश्री ने अणुव्रत चलाया है। इसलिए इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार होना चाहिए।

—नन्द किशोर नौटियाल

सम्पादक, ब्लीट्ज

आचार्यश्री तुलसी जैन सम्प्रदाय में एक उच्चकोटि के संत हैं, ये समाज-सुधारक हैं। भारतवर्ष की आजादी के बाद आचार्यश्री ने देश के नागरिकों में चरित्र-उत्थान के लिए अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। वे साम्प्रदायिकता व संकुचितता से दूर हैं। ऐसे ही संतों से देश का मार्ग-दर्शन हो तो भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

—ईश्वर पेटलीकर
सम्पादक 'संदेश'

आज भारत जिस स्थिति से गुजर रहा है, उससे उसे उबारने के लिए यह पहला कर्तव्य है कि समाज का नैतिक स्तर ऊंचा उठे, यह तभी संभव है जबकि अपने धर्माचार्य, संत, महंत आदि साम्प्रदायिक कार्यकलापो को कुछ समय के लिए विश्राम देकर, जिस समाज में श्वास ले रहे हैं, उसकी नैतिक शुद्धि के लिए प्रयत्न करें। आचार्य तुलसी ने इस ओर दिशा-दर्शन किया है।

—प्रह्लाद राय ब्रह्मभट्ट
सम्पादक, जनसत्ता

भूदान आन्दोलन के बाद राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण एवं नैतिक क्रांति का सबल संवाहक आन्दोलन कोई है, तो अणुव्रत है। इस आन्दोलन ने व्यक्ति-व्यक्ति को नैतिक शृंखला से जोडकर अहिंसक समाज-संरचना की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। वर्तमान परिस्थितियों मे अणुव्रत आन्दोलन को और अधिक गतिमान करने की अपेक्षा है। आज सम्पूर्ण देश अणुव्रत आन्दोलन से बहुत बड़ी अपेक्षा रखता है।

—यशपाल जैन
अणुव्रत प्रवक्ता

मेरे मन में आपके प्रति श्रद्धा या विश्वास ही नहीं है। मैं आपकी गणना देश के बड़े धार्मिक लोगों में करता हूं। आप आज हमारे राष्ट्र मे जो काम कर रहे हैं, वह आप जैसे महान् व्यक्ति ही कर सकते हैं। आप द्वारा जनता का सफल पथ-दर्शन होता है और जनता आपकी बातों को श्रद्धा से सुनती है, लोक-जीवन पर आपका प्रभाव है।

—लाला जगतनारायण
सम्पादक, पंजाब केशरी

आचार्यश्री तुलसी के मार्ग-दर्शन ने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हेतु, अर्थ पर आधारित सामाजिक मूल्य में परिवर्तन कर, समाज को एक नया मोड़ देकर, शिक्षा के विकास और सामाजिक जागरण के लिए विविध प्रवृत्तियों का संचालन एवं प्रसारण कर एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आचार्यश्री जैसे युगपुरुष संसार में विरले ही होते हैं। यदि समाज उनके दिखाये गये रास्ते पर चलता रहा तो हम निःसंदेह कह सकते हैं कि भारत का नाम एक बार फिर सारे संसार मे गौरव के साथ लिया जाने लगेगा।

—महावीर अधिकारी
सम्पादक, नव भारत टाइम्स

धर्मगुरु वे होते हैं जो प्रत्येक समस्याओं का समाधान करें। हम लोग धर्म-गुरुओ के पास समस्या का समाधान पाने के लिए आते हैं। आचार्यजी से जब-जब मिलना हुआ। हर बार समस्याओ से उबरकर समाधान पाया है। अणुव्रत भी देश की जटिल समस्याओ का समाधान है। इसे अपनाकर हम अपनी समस्याओ से निपटें। इसी मे हमारा भला है, देश का भला है।

—-रतन लाल जोशी
सम्पादक, हिन्दुस्तान दैनिक

···कोई भी राष्ट्र, जिसकी नैतिक आधारशिला कमजोर हो, अन्य क्षेत्रों में कितनी भी उन्नति करने पर अन्ततः वह टिक नहीं सकता। ऐसी दशा मे देश मे नैतिकता की भावना जागृत कर इसको जीवन में व्यवहृत करने के लिए आरम्भ किये गये आचार्य तुलसी के इस अणुव्रत-आन्दोलन का भारी महत्त्व है। अपने देश के नैतिक उत्थान में विश्वास रखने वाले देश के प्रत्येक विचारवान व्यक्ति को बिना किसी जाति एवं धर्म के भेदभाव के इस आन्दोलन को अपनाकर उसकी पूर्ति में योग देना चाहिए।

—शंकरलाल वर्मा

सह-सम्पादक, हिन्दुस्तान

हमारी सम्मति मे नैतिकता के मूल्यांकन का यह तरीका सही नहीं है। अनैतिकता या भ्रष्टाचार का इस समय बोलबाला है। इसे इनकार न करते हुए भी हम कहेंगे कि 'खुदरां फजीहत दीगरा नसीहत' के बजाय 'हकीमजी पहले अपना एलान कीजिए' का रास्ता अपनाया जाए, तभी अनैतिकता की बाढ़ को रोका जा सकता है।

अणुव्रत आन्दोलन मनुष्य मे नैतिकता लाने का आन्दोलन है। नैतिकता का हमारा मूल्यांकन बदलना चाहिए और उसकी कसौटी यह होनी चाहिए कि दूसरों से चाहने के बजाय खुद करने का प्रयत्न किया जाए।

—मुकुट बिहारी वर्मा
सम्पादक, हिन्दुस्तान

अणुव्रत आन्दोलन आज की अनेक सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करता है। आज व्यापारिक क्षेत्र मे कितना असत्य, अनीति और भ्रष्टाचार प्रविष्ट हो गया है। अणुव्रत सब बुराइयो का निषेध करता है।

इस आन्दोलन ने अनेक व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित किया है। उन्होंने आर्थिक हानि उठाकर भी अणुव्रतों का पालन किया है। व्रत का अर्थ ही दृढ संकल्प होता है। जो लोग धर्म और नीति की सीधी राह पर चलने का संकल्प करते है, शुरू में भले ही उनकी संख्या थोडी हो सकती है किन्तु उनका जीवन दूसरों के लिए प्रकाश का काम देता है। अन्त में उनकी श्रद्धा फूलेगी, फलेगी और यह दुनिया आज से अधिक अच्छी जगह बनकर रहेगी।

—शोभालाल गुप्त
सह-सम्पादक, हिन्दुस्तान

आचार्यश्री तुलसी ने अन्ध-विश्वासों और रूढ़ियो मे भटकी नारी को नयी चेतना प्रदान की है। दहेज एक राष्ट्रीय समस्या है। हमे ऐसे उचित तरीके ढूढने हैं जो दहेज के बहते हुए दावानल को समाप्त कर सकें। आज महिलाओं का शैक्षणिक स्तर बढ़ रहा है पर आवश्यकता है इसके साथ-साथ संस्कारों का भी निर्माण हो। शिक्षा के साथ सद् संस्कारों का योग ही महिला जाति को विकास की दिशा मे आगे बढ़ा सकता है।

—श्रीमती शीला झुनझुनवाला
सम्पादिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान

किसी भी समाज व देश के निर्माण मे अर्थ व राजनीति का प्रमुख हाथ होता है लेकिन आचार्यश्री के अणुव्रत के आन्दोलन की नीति को जब पढ़ा तो लगा कि अणुव्रत इनके महत्त्व को स्वीकारता तो है मगर इन्हें सर्वोपरि महत्त्व नही देता। देश के निर्माण में नैतिक और चारित्रिक मूल्यो का होना भी परमावश्यक है। अन्य नीतियो के मूल्य बदल सकते हैं पर नैतिक और चारित्रिक मूल्यों मे कभी परिवर्तन नही होता।

—के० आर० मलकानी
सम्पादक, मदरलैण्ड

जैन-दर्शन न केवल विचार सहिष्णुता का ही पक्षपाती है, अपितु आचार-संहिता के पालन पर भी बहुत बल देता है। अहिंसा का जितना महत्त्व जैन-धर्म मे है, उतना और किसी धर्म मे नही। विचार सहिष्णुता का सिद्धान्त अहिंसा के मानसिक रूप का ही प्रतिपादन करता है। मनसा, वाचा और कर्मणा अहिंसक होना चाहिए। पूर्ण रूप से अहिंसक का अर्थ महाव्रती होना किन्तु आंशिक या अनपेक्षित हिंसा से बचना ही अणुव्रती होना है।

आचार्यश्री तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन की यही पृष्ठभूमि है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जन-साधारण को कैसा आचरण करना चाहिए इसका सुन्दर विधान अणुव्रत आन्दोलन ने किया है। व्यक्ति-उत्थान मे इस आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

—सत्यदेव शर्मा 'विरूपाक्ष'

आचार्यश्री ने नये सन्दर्भों में नयी व्याख्या देने का प्रयत्न किया है। धर्म जीवन को सुगम और सरल बनाने की प्रक्रिया है। वह धर्म, धर्म नहीं है जो प्रजा का तनाव बढ़ाए। आपने वर्तमान समस्याओं के समाधान में धर्म का जो उपयोग बताया है उससे नयी पीढ़ी उपकृत हो रही है। धर्म के साथ साम्प्रदायिकता का अनुबन्ध आप कतई मान्य नहीं करते इसलिए आपने मानव धर्म को उजागर करने का संकल्प स्वीकार लिया है।

—श्रेयांस शाह
सम्पादक, गुजरात समाचार

अणुव्रत आन्दोलन नैतिक जागरण का आन्दोलन है। स्वतंत्र भारत के नागरिकों के लिए ऐसे आन्दोलनों की परम आवश्यकता है। ऐसे आन्दोलन ही जनता का सही मार्ग-दर्शन कर सकते हैं।

—दुर्गा प्रसाद चौधरी
कप्तान

हिंसक शक्तियों ने आज राष्ट्र को अणुबम की छाया से आच्छादित कर दिया है। अणुबम की संहारक शक्ति के सम्मुख अहिंसक शक्ति का उदय होना एक महत्त्वपूर्ण बात है। वह अहिंसक शक्ति है अणुव्रत। आचार्य तुलसी जी हिंसा, भय, प्रतिशोध की आग को बुझाने व प्रेम, सौहार्द, अहिंसक जीवन जीने की कला सिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह राष्ट्र के लिए गौरव की बात है।

—कर्पूर चन्द कुलिश

अणुव्रत का आविष्कार आचार्यश्री तुलसी ने किया। अणुव्रत सत्य की खोज और अभिव्यक्ति का सर्वमान्य मंच है। वह सत्य से आबद्ध है। किसी सम्प्रदाय से आबद्ध नहीं है। उसके परिपार्श्व मे सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की चेतना के जागरण का प्रयत्न हुआ है। अणुव्रत का व्यावहारिक सार यह है। धर्म केवल परलोक को सुधारने के लिए नहीं होना चाहिए। धर्म का उपासना पक्ष गौण और चारित्रिक पक्ष प्रधान होना चाहिए।

—राजेन्द्र शकर भट्ट

प्रगतिवाद या क्रान्तिवाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सर्व काल के लिए किसी आचार का फतवा न देकर प्रगति की प्रगतिशील तथा क्रान्ति की क्रान्तिवादी परिभाषा करता है। आचार्यजी प्रगति के साथ क्रान्ति का स्वर भी बुलन्द कर रहे हैं। अणुव्रत क्रान्ति व प्रगति का मूर्त रूप है।

—मन्मथ नाथ गुप्त

देश के नैतिक उत्थान के लिए अणुव्रत के माध्यम से आचार्यश्री जो प्रयास कर रहे हैं, वह बहुत ही मूल्यवान् है। हमारे देश के वरिष्ठ नेता भी अब यह स्वीकार करने लगे है कि जब तक देशवासियों का नैतिक स्तर ऊंचा नही होगा, तब तक देश प्रगति नही कर सकेगा। हम सब लोगो को आचार्यश्री की वाणी से पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए और उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

—कृष्ण चन्द्र अग्रवाल
संपादक, दैनिक विश्वमित्र, कलकत्ता

अणुव्रत का विधान व्रतो का समीकरण या संयम और असंयम, सत्य और असत्य, अहिंसा और हिंसा, अपरिग्रह और परिग्रह का मिश्रण नही अपितु जीवन की मर्यादा का स्वीकरण है।

अणुव्रत आन्दोलन मूलतः चारित्रिक आन्दोलन है। नैतिकता और सत्याचरण ही इसके मूलमंत्र हैं। आत्म-विवेचन और आत्म-परीक्षण इसके साधन हैं। कल्याण ही जीवन का चरम सत्य है। जिसकी साधना आचरण है। अणुव्रत आन्दोलन उसी की भूमिका है।

—राम सेवक श्रीवास्तव
सह-सम्पादक

इस आणविक युग मे शस्त्रों की प्रतियोगिता चल रही है। इस प्रतियोगिता मे सर्वनाश प्राय: निश्चित दिखाई देता है। इस संकट मे आचार्यश्री तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन एक नयी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और नैतिक क्रान्ति का सन्देश देकर हमको मार्ग दिखा रहा है।

इसमें केवल व्यक्ति की ही आत्मरक्षा नही है। प्रत्युत ससार के सभी राष्ट्रों की रक्षा निहित है।

—गोपालचन्द्र नियोगी
सम्पादक, दैनिक वसुमती

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से विश्व-शक्ति और सद्भावना के प्रसार में उल्लेखनीय योगदान किया है। हिंसा की दहकती हुई ज्वाला पर वे अहिंसा का शीतल जल छिड़क रहे हैं। अणुव्रत सन्देश राष्ट्र के चारित्रिक उत्थान में मूल्यवान सहयोगी है। अगर संसार के सभी भागो मे लोग अणुव्रतों को ग्रहण करें, तो युद्ध की सम्भावना बहुत अंशों तक समाप्त हो जायेगी। विश्व युद्ध को रोकने के लिए अणुव्रत एक अमोघ अस्त्र है। यूरोप मे चलने वाले 'नैतिक पुनरुत्थान आन्दोलन' की तुलना में अणुव्रत आन्दोलन का महत्त्व अधिक है। अगर संसार के विशिष्ट राजनितिज्ञ अणुव्रतो के प्रति अपनी आस्था प्रकट करें तो युद्ध का निवारण करना आसान हो सकता है। केनेडी, मैकमिलन, दगात्य और ख्रुश्चेव जैसे राजनीतिज्ञ जिस दिन अणुव्रत ग्रहण कर लेंगे, उसी दिन युद्ध की संभावना समाप्त हो जायेगी।

—अनन्त मिश्र
संपादक, सन्मार्ग, कलकत्ता

सन्त विनोबा ने युग की समस्या को गम्भीर दृष्टि से देखते हुए राष्ट्रीय चरित्रोत्थान के अपने आन्दोलन के साथ भूदान, ग्रामदान और सम्पत्ति दान आदि यज्ञो की प्रतिष्ठा की है। आचार्यश्री तुलसी ने मानव गुण विकास का कार्य लिया है और अणुव्रत के द्वारा आचार्यश्री ने स्वयं गांव-गांव, नगर-नगर जाकर वातावरण बनाया है। इस आन्दोलन का सद्प्रभाव पडा है। अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से आत्मानुशासन का कार्य बढ़ा है जिसका कि जनतंत्र मे महत्त्व है। आत्मानुशासन से मनोबल और संघर्ष-शक्ति बढती है। इस तरह अणुव्रत आन्दोलन का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

—हरिदत्त शर्मा

देश को नैतिक आधार देने के लिए घर-घर मे 'अणुव्रत' का प्रचार होना आवश्यक है। देश की नैतिक स्थिति को संभालने के लिए आचार्यश्री जैसे महान् पुरुषो की तपस्या का योग बहुत बडा आधार हो सकता है।

—शिव रामन् शर्मा
सम्पादक, दि निर्माण

सद् आचरण, मानव धर्म मे विश्वास, सत्य मे आस्था तथा कर्त्तव्य परायणता—ये सभी चरित्र की आधारशिला है। बिना इनके शिक्षा अधूरी है। देश की सुरक्षा उसके सदाचारी, निर्भीक और कर्तव्यनिष्ठ युवक-युवतियो पर ही निर्भर करती है। इसलिए उनमे इन सद्गुणो को विकसित करना समाज, शिक्षा, सस्थाओ और परिवारो की जिम्मेदारी है। इस क्षेत्र मे अणुव्रत आन्दोलन का प्रयास सराहनीय रहा है।

—**सावित्री देवी वर्मा**
सपादक, बाल भारती

हमारे देश के लिए इस समय ऐसे महान् सत्पुरुष की परम आवश्यकता है जो घृणा और द्वेष को तिरोहित करवाकर समाज को संगठित करने का शुभ कार्य कर रहे हैं। समाज के संगठन व उत्थान मे अणुव्रत आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

—वृन्दावन लाल वर्मा

विदेशी

हम लोग यूनेस्को के द्वारा शांति के अनुकूल वातावरण बनाने की चेष्टा कर रहे हैं। इधर अणुव्रत आन्दोलन भी प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। यह बड़ी खुशी की बात है। मैं इसकी सफलता चाहता हूं कि आपका सत्कार्य ससार में फैले और शांति का मार्ग-दर्शन करे।

—**डॉ० लूथर इवान्स**
डायरेक्टर जनरल, यूनेस्को

भारत के किसी भी सम्प्रदाय के अध्येता के लिए, सप्रदाय एवं धार्मिक इतिहास के लिए यह काफी उपयोगी है। आचार्यश्री का भारत के आध्यात्मिक जीवन मे काफी योगदान है और यह भारतीय जीवन को सीधा प्रभावित करता है। अणुव्रत आन्दोलन भारत की आध्यात्मिक शिक्षा तथा नैतिक उपलब्धियो की ही बहुत बडी सम्बन्धित परम्परा है।

—डॉ० डब्ल्यू० एम० ब्राउन

सस्कृत विभागाध्यक्ष, पेनेन्सिल विश्वविद्यालय, अमेरिका।

अध्यक्ष, अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज

एक चिराग से हजारों चिराग जलाये जा सकते हैं। आचार्य तुलसी के उपदेश तथा उदाहरण रूपी जगमगाते चिराग से अनेक पवित्र जीवन प्रकाश से भरे जा सकते हैं। आपका शांति और बंधुत्व का आदर्श सम्पूर्ण भारतवर्ष मे फैले।

—कुमारी मेलि संट सेफिल

मैं चाहता हूं कि मानव-जाति के नैतिक उत्थान के उद्देश्य से चलने वाली इस योजना का पश्चिम मे भी प्रसार हो। यह आन्दोलन पश्चिम और पूर्व का सन्तुलित समन्वय साधने का एक सुन्दर उपक्रम है।

—वेंकनवाल ब्लम्बर्ग

आज दुनिया को आध्यात्मिक एकता की जितनी आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नही थी। आज यदि हम सच्चे आध्यात्मिक प्रेम-भाव से मिलकर काम करे तो सभी लक्ष्य सिद्ध हो सकते हैं। जैन धर्म और उसके सिद्धान्तों का हर देश मे प्रसार हो। यह विश्व के लिए वरदान ही सिद्ध होगा। अणुव्रत-आन्दोलन स्थायी विश्व शांति का सच्चा और शक्तिशाली साधन बन सकता है। धीरे-धीरे ही सही किन्तु यह आन्दोलन सारे विश्व मे फैल सकता है।

—बारन फ्रेरी फोन ब्लोमबर्ग
बोस्टन, अमेरिका

नैतिक विकास की बाते अन्य देशो मे भी होती है। किन्तु वहां जीवन का विज्ञान विकसित नही हुआ। यहा मैंने जीवन की बात सुनी। 'अणुव्रत' जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। हमारे देश मे इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता है।

—हान्स डी० स्कोज बेच
जर्मन विज्ञान

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध इस समय समस्त संसार की एक प्रमुख समस्या है। विश्वव्यापी रूप मे यानी समग्र विश्व की दृष्टि से नयी सीमाएं निर्धारित करनी आवश्यक है। इस कार्य मे सहायता के लिए भारतवर्ष के जैनाचार्य श्री तुलसी अपने अनुयायियों को दुनिया मे हर चीज पर परस्परावलम्बी, अहिंसक दृष्टि से विचार करने की प्रेरणा देते हैं। विश्वव्यापी मैत्री के फूल व्यक्तिगत आत्म-संयम के बीज से ही उत्पन्न होते है। इस बात को प्रमुख मानने हुए आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन संगठित किया है। यह एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय समाज के निर्माण का प्रयत्न है जिसमे जैन और अजैन सभी ऐसे लोग शामिल हो सकते है जो आदर्शों को असली रूप देने के लिए निश्चित की गई कुछ अनुशासनात्मक प्रतिज्ञाओं को अपनी क्षमता के अनुसार स्वेच्छापूर्वक ग्रहण करने के लिए तैयार हों।

—वुडलैण्ड कहेलर
अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय शाकाहारी संघ, लन्दन

आचार्यश्री तुलसी निःस्वार्थ भावना से नैतिक जागरण का कार्य कर रहे हैं। एक ओर विश्व विनाश के कगार पर खड़ा है, ऐसे समय मे धर्माचार्यों को नैतिक उत्थान तथा अहिंसात्मक प्रतिरोध का संदेश देना चाहिए। स्विटजरलैंड मे भी नैतिक उत्थान का एक आन्दोलन चल रहा है। जिसे इण्टरनेशनल कोक्स मूवमेन्ट कहते हैं। मैं इसे पश्चिम में अणुव्रत आन्दोलन की ही प्रतिच्छाया समझता हूं।

डॉ० वाल्थर शब्रिंग
हेम्बुर्ग विश्वविद्यालय

आधुनिक भारत के वे एक अत्यन्त प्रमुख महापुरुष हैं और इस सम्मान के पूर्णतया अधिकारी हैं। उन्होंने न केवल तेरापंथ समाज का सही मार्ग-दर्शन किया बल्कि समूचे विश्व का मार्ग-दर्शन किया है। नैतिक जागरण का द्वार उन्मुक्त कर दिया। जिसके लिए आज की अशान्त और भस्त दुनिया मे विवेक और शान्ति का सम्बल-स्तम्भ है।

—डॉ० लूई रेनू
पेरिस विश्वविद्यालय

आचार्यश्री तुलसी नैतिकता को सर्वोपरि महत्त्व देते हैं। वे कहते हैं कि केवल श्रोता बनकर मत रहो! अपितु आचरण भी करो, सक्रिय मनुष्य बनो। प्रत्येक सत्संग का परिणाम व्रत के रूप मे आना चाहिए! आचार्यश्री तुलसी अपने सम्प्रदाय के अनुयायियो को ही नही, अपितु सभी को नैतिक सिद्धान्तो के अनुसार जीवन बिताने की प्रेरणा देते हैं।

—डब्ल्यू फोन होखाम्मेर

इस महान् भारतीय आचार्य के कार्य का हमारे आधुनिक जगत पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। हिंसा के विरुद्ध एक मात्र शब्द और सन्देश मैत्री का है। मनुष्यो के प्रति मैत्री, जीवो के प्रति मैत्री और प्राणी मात्र के प्रति मैत्री। यह मेरी उत्कट आन्तरिक इच्छा है कि इस महान् धर्माचार्य की वाणी का असख्य मानव-आत्माओ द्वारा श्रवण हो जिससे कि वे इस विश्व को अधिक मानवीय और अधिक शातिमय बनाने के प्रयास मे सहयोग दे सकें।

— डॉ० फिलिप पार्डिनास

जैनधर्म के सिद्धान्तों व सम्यग् दशन, सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चारित्र की त्रिधियों और अणुव्रत आदोलन का मुझ पर गहरा और स्थायी असर पड़ा है।

अणुव्रत आन्दोलन के प्रणेता आचार्यश्री तुलसी दीर्घायु हों और मानव जाति का पथ-प्रदर्शन करते रहे।

—हेलमुथ ग्लेटमर

आज सर्वत्र एक प्रकार की अशान्ति छाई हुई है। चाहे जहा जाएं कही भी शान्ति नजर नही आती क्योकि हम अपने कर्त्तव्यो को ठीक से पहचान नही रहे है। अणुव्रत का कहना है कि हम अपने कर्त्तव्यो के प्रति प्रामाणिक रहे। अपने व्यवहार मे प्रामाणिकता आये तब ही शान्ति मिल सकती है। अणुव्रत शान्ति का पैगाम है।

—ए० जे० आरनाल्ड
मजिस्ट्रेट

□